ओ३म्

सत्यापन क्रमांक : RAJHIN/2015/60530

महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश

हिन्दी मासिक

वर्ष : ६ अंक : ८ १ अगस्त २०२० जोधपुर (राज.) पृ.:३६ मूल्य १५० ₹ वार्षिक

श्री पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति

जन्मः- मार्गशीर्ष कृष्ण द्वितीया संवत् १९४६ वि. शनिवार ०९.११.१८८९
निधनः- भाद्रपद शुक्ल, द्वितीया संवत् २०१७ वि. बुधवार २४ अगस्त १९६०

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् । -ऋग्वेद ९।६३।५

सबको श्रेष्ठ बनाओ

महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश का मुख्य प्रयोजन

महर्षि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व, कृतित्व, व उनके द्वारा लिखित समस्त साहित्य तथा उनके सार्वभौमिक अद्वितीय कार्यों व सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार, स्थापना व व्यवहार में साकार करने के लिये कार्य करना ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर का मुखपत्र

वर्ष : ६ अंक : ८

दयानन्दाब्द : -१९७

विक्रम संवत् : माह-भादवा २०७७

कलि संवत् ५१२०

सृष्टि संवत् :१,९६,०८,५३,१२१

सम्पादक मण्डल :

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर

डॉ. सुरेन्द्रकुमार, हरिद्वार

डॉ. वेदपालजी, मेरठ

पं. रामनारायण शास्त्री, सिरोही

आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा

कार्यवाहक सम्पादक :

कमल किशोर आर्य

Email: sampadakmdsprakash@gmail.com

9460649055

प्रकाशक : 0291-2516655

महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्मृति भवन न्यास, जसवन्त कॉलेज

के पास, जोधपुर ३४२००१

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है । किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र जोधपुर ही होगा ।

Web.-www.dayanadsmritinyas.org.

वार्षिक शुल्क :१५० रुपये

आजीवन शुल्क : ११०० रुपये

(१५वर्ष)

महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश

अनुक्रमणिका

क्या		कहाँ
१.	सम्पादकीय....	४
२.	प्रार्थना-विषय.....	८
३.	वेद-वचन.....	६
४.	कहाँ है आत्मा....	११
५.	दयानन्द कौन ?	१२
६.	अथ ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	१६
७.	ऋषिगाथा..	२५
८.	आर्यसमाज का इतिहास	२८
६.	आर्य समाचार	३२

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास

बैंक ऑफ बडौदा खाता संख्या-01360100028646

IFSC BARB0JODHPU

यह पांचवा अक्षर जीरो है

सम्पादकीय

नागरिकता संशोधन कानून:

देश और राज्य सरकारों को ऋणी होना चाहिए कोरोनावायरस का कि एक अच्छे कानून के विरोध में हो रहे धरने समाप्त हो गए। किंतु सरकार को यह सोचना चाहिए कि आंदोलनकारी शांति से नहीं बैठेंगे और उससे भी अधिक ध्यान में यह रखने की आवश्यकता है कि शासक लोग सरकारें चला रहे हैं, परचून की दुकानें नहीं। यदि मोदी जी और अमित शाह जी सुनिश्चित है कि यह कानून अच्छा है, तो देश में इसके विरुद्ध धरना लगाने वालों के विरुद्ध देशद्रोह के मामले चलने चाहिए और जिस राज्य में धरने लगाए जाते हैं उसकी कानून व्यवस्था की जिम्मेदार राज्य सरकार को तुरंत उखाड़ फेंकना चाहिए।साथ ही इसके विरोधी आंदोलनकारियों को अभिव्यक्ति की छूट के नाम पर देशद्रोह और सीधे शब्दों में कहें तो हिंदू विरोधी सांप्रदायिकता की छूट देकर वोटों की राजनीति से बचना चाहिए। किन्तु, यदि उन्हें लगता है कि यह कानून गलत है तो अविलम्ब वापस ले लेना चाहिए।

चीन से टकराव

पूरे विश्व के विरुद्ध वर्षों से जैवयुद्ध चीन ने छेड़ रखा है। आज ही मैंने चीन द्वारा दुनिया में फैलाए गए विषाणु के बारे में इंटरनेट पर खोज की तो विश्व स्वास्थ्य संगठन की वेबसाइट का एक पृष्ठ खुला जिसका यूआरएल है:https://www-who-int/csr/don/archive/ country/chn/en/। इस पृष्ठ पर जब मुझे सूची बहुत लंबी लगी तो कॉपी करके माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल में पेस्ट की। वर्ष २००० से २०२० तक चीन से वायरस की जो अद्यतन सूचनाएं या आंकड़े मिले उनके ६६० इंद्राज इस पृष्ठ पर है जिनमें बर्ड फ्लू ,सार्स, एच एन श्रेणी वाली बीमारियाँ, पीला बुखार से लेकर वुहान कोरोनावायरस तक के नाम हैं। इन बिमारियों से इसने लाखों हत्याएं दुनिया में की है और करता जा रहा है। कोरोना वायरस से दुनिया में हो रही हत्याएं, खुद के द्वारा पैदा किये इस विश्व संकट के समय में पीड़ित देशों को नकली और स्तरहीन उपकरणों और सामान भिजवाना और देशों द्वारा लौटने पर बेशर्मी से कहना कि सामान की गुणवत्ता खरीदार देश की जिम्मेवारी है! अर्थात चीन ने बेशर्मी की सारी हदें पर कर राखी हैं। कोरोना वायरस को पूरी दुनिया भुगत रही है। इससे कई देश कमजोर हुए हैं। चीन बेशर्मी से सिर्फ इसका लाभ उठा रहा है; अत्यधिक निर्दयता से कोरोना वायरस के कारण चीन में स्थापित विदेशी कंपनियों के शेयर के भाव गिरते ही उनको कौड़ियों के दाम खरीद चीन ने उनकी हत्या कर दी। पूरे विश्व में सुनियोजित रूप से कोरोना फैलाया, इसके बारे में समय पर सूचनाएं नहीं दी, गलत सूचनाएं दी; लेकिन कोई उलाहना नहीं सुनता। दुनिया भर में राजनैतिक, आर्थिक और साम्राज्यवादी नीतियों के चलते चीन से पूरा विश्व आतंकित है। उत्तर कोरिया और पाकिस्तान जैसे प्रतिदेशों को शह देना, दुनिया में परमाणु तकनीक और सामान की कालाबाजारी करना चीन का ही काम है। उसे दुनिया की कोई परवाह नहीं है।

यद्यपि चीन से आयातित सामान की कोई गुणवत्ता नहीं है। किंतु अपने चयनित और सिर्फ स्वलाभकारी आर्थिक नीतियों के चलते दुनिया के सभी देशों में अपने निर्मित सामान को बहुत सस्ती दरों पर बेचकर दुनिया भर के देशों की अर्थव्यवस्थाओं और उद्योग धंधों को चौपट कर दिया है। तात्कालिक आर्थिक लाभ के चलते अन्य देशों के नागरिक और चीनी सामान आयातक व्यापारी चीन के षड्यंत्रों का अनचाहे हिस्सा बनकर अपनी ही अर्थव्यवस्था को बर्बाद करते रहे हैं। अन्य देशों के उत्पादकों द्वारा गुणवत्ता और उपभोक्ता हितों का ध्यान नहीं रखने और अत्यधिक मुनाफाखोरी से भी वे चौपट हुए, जिनमें भारत भी एक है। यही कारण है कि आर्थिक सक्षमता और निर्यात क्षमता के चलते चीन अधिकांश देशों पर चौधराहट कर रहा है। चीन ने न सिर्फ अपनी आबादी को काम पर लगाया, वरन् अपनी षड्यंत्रकारी आर्थिक नीतियों से चीन में सामान का उत्पादन सस्ता कर बहुराष्ट्रीय कंपनियों को आमंत्रित किया; उन पर जासूसी की;उनकी तकनीक चुरा बेहाल करता गया और अपनी प्रजा को खुशहाल करता गया। चीन की यह नीति शेष विश्व के लिए बहुत भयानक है, जिसे अब अधिकांश देशों ने समझ लिया है। दुनिया पर जैव हमलों की कड़ी में कोरोनावायरस जैसे घातक हमले के बाद दुनिया के देश भी जागे हैं और उनके नागरिक भी और चीन से अपना व्यवसाय अन्यत्र ले जाने को तैयार हुए हैं।

यह निश्चित है कि वुहान कोरोनावायरस के बाद के विश्व मे भारत ने खुद को चीन के विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया है। इसे चीन कभी नहीं पचा पायेगा। उसका लक्ष्य भारत को चीन के विकल्प के अयोग्य बनाने जितना कमजोर बनाना है। लेकिन भारत के विरुद्ध चीन ने पारंपरिक युद्ध का आरंभ भी किया है।अभी युद्ध के अलावा उसके पास कोई और विकल्प नहीं है। भारत चीन सीमा पर रक्त बहना शुरू हो गया है। चालाक और शक्तिशाली चीन की हिमाकत इतनी बढ़ गई है की अपने द्वारा किए गए सीमा के उल्लंघन पर अब तो उसने वार्ता करने से भी मना कर दिया है। चीन की इस ढिठाई को सहन करना किसी के लिए भी संभव नहीं है, भारत के लिए भी नहीं है और इसीलिए जब भारत ने चीन के विरुद्ध अपने संसाधनों को एकत्र करना आरंभ किया, तो अपने आर्थिक नीतियों से गुलाम बने नेपाल और पाकिस्तान को उकसा कर भारत के विरुद्ध और भी मोर्चा खोल रहा है और खोलता जाएगा। **इन देशों की मूर्ख सत्ताएँ समझ नहीं रही है कि चीन उनको भारत का दुश्मन बनाकर हड़प्पा जाएगा और वे खुद की मूर्खता से शत्रु बनाए गए भारत से गुहार भी न लगा पाएंगे।** चीन से जितने देशों की सीमाएं सटी हुई नहीं है, उससे अधिक देशों के साथ चीन का सीमा/प्रदेशिकविवाद है। यह तथ्य दर्शाता है कि चीन गुंडागर्दी की किस हद तक जा रहा है। खैर! सीमा पर तो हमारी सेना सक्षम और सतर्क है।

कुछ समय पूर्व चीन के विरुद्ध सोशल मीडिया पर एक अभियान चला था कि चीनी सामान का बहिष्कार किया जाए। मुझे स्मरण है उस समय एक भारतीय उद्यमी का लगभग

बारह मिनट का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था, जिसमें वह यह प्रमाणित कर रहा है किचीन हाथ खींच ले, तो भारत की अर्थव्यवस्था, राजनैतिक व्यवस्था और भारतीयों का जीवन स्तर कुछ ही दिनों में तबाह हो जाए। हम चीन पर इतने निर्भर हो चुके हैं–यह बड़ी ही भयानक बात है। आज यदि चीन भारत के विरुद्ध संपूर्ण स्तर का युद्ध छेड़ दे तो क्या ऐसी स्थिति में भी भारतीय व्यापारी चीन से सामान आयात करेंगे? फिर हमारा युद्धकाल मे क्या कर्तव्य है? युद्ध काल में भी सामरिक के अलावा किसी भी अन्य तरह के संपर्क (व्यापारिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, या अन्य) का चीन या चीनियों से संपर्क रखने वाले लोगों को चीन हथियार बनाएगा और भारतीयों के माध्यम से ही१. भारतीयों को हतोत्साहित करेगा! २. भारतीयों को चीन से युद्ध मे बर्बाद होने की अफवाहें फैलायेगा।३. छोटी सी जमीन के बदले संघर्ष को मूर्खता बताएगा। ४. भारत के व्यापार और प्रतिष्ठान चीन के सहयोग के बिना बर्बाद होने की अफवाहें फैलाएगा। ५. चीन में मौजूद भारतीयों पर खतरे की बात करेंगे।

युद्धरत देश में आम नागरिकों का भी बहुत बड़ा दायित्व होता है। कुछ दायित्वों का वर्णन विगत अंक के अंतिम पृष्ठ पर किया गया है। किन्तु यहाँ तो विचारकों और संपादकों के दिमाग से भी विवेक के साथ साथ देश भी निकला हुआ है और इसीलिए नामवर अखबारों में भी चीन समर्थक और भारत को हतोत्साहित करने वाले लेख प्रकाशित हो रहे हैं। अखबारों में लक्ष्मीवाहनों के लेख और समाचार भी देख रहा हूँ जिनको देश से लेश मात्र भी लगाव नहीं है। जागरूक नागरिक उन्हें पहचान लेंगे।

इसीलिए, अपनी दृष्टि खुली रखें। सायास या अनायास बने देशद्रोहियों को पहचाने।उनके विरुद्ध आवाज बुलंद करें। इन लोगों के लिए जैसे दोस्ती, दावत, मनोरंजन, रिश्ते और भ्रमण तक व्यापार और पैसे के लिए होते हैं।इससे बिगड़ चुकी अपनी आदत और कुसंस्कारों के कारण यह देश हित को भी बेशर्मी और श्रमकातरता से पैसों से तोल रहे हैं।

'शिकारी आएगा!जाल बिछाएगा!!दाना डालेगा!!!फँसना मत!!!!!' सावधानी कायह गाना गाते हुए कबूतर दाने के लालच में आकर जाल में फंस ही जाते हैं। सोचे कि हम भारतीय हैं या कबूतर!!!!! शौक के मारे हैं! या सस्ता माल खरीदने के मारे भारतीय चीन के जाल में ना फंसे। **<u>भारत से चीन गए एक एक पैसे का उपयोग भारतीय सैनिक के सीने में धँसने वाली गोली में होगा। जितना चला गया, उस पर ही बस करो। अपने ही जवानों की मौत के सौदागर मत बनो!</u>**

कोरोनिल प्रकरण

कोरोना आपदा जारी है। स्थान की कमी के कारण इस विषय को अगले अंक पर छोड़ स्वामी रामदेव प्रकरण पर थोड़ी सी बात लिख कर इति करता हूँ। स्वामी रामदेव की कोरोनिल के विक्रय से प्रतिबंध हटा लिया गया और देश भर में यह दवा बिक रही है। इस नाम से पहले ही एक दवा उपलब्ध होने से पेटेंट कानून के विवाद में मैं नहीं जाना चाहूंगा।

मुझे सिर्फ इतना ही कहना है कि कोरोना के विरुद्ध आयुर्वेदिक इलाज के प्रयोग अकेले स्वामी रामदेव ने नहीं किए हैं। वरन् आयुष मंत्रालय के अधीन चलने वाले आयुर्वेदिक अस्पतालों के चिकित्सकों ने कई जगह किए हैं और सफल रहे हैं। पतंजलि कोई सड़क छाप चिकित्सक नहीं है कि बिना ठोस आधार के कोई दावा कर दे। भले ही पहले सरकारों के दबाव में चिकित्सकों ने मनाही की हो, किंतु फिर बयान दे ही दिया कि दवाइयों का परीक्षण हुआ था। आयुर्वेद यह कहता है कि इस चिकित्सा का एक स्थान पर हुआ सफल प्रयोग सर्वत्र मान्य होता है। वैसे कोरोना की निश्चयात्मक चिकित्सा तो एलोपैथी के पास भी नहीं है। फिर भी पतंजलि के उत्पाद का और घोषणा का इतना व्यापक विरोध भारत में एलोपैथी चिकित्सा माफिया को रेखांकित करता है।

भारत के नाकारा रिश्वतखोर ईर्ष्यालु तन्त्र के कारण भारत की पहली परखनली शिशु दुर्गा के सृजक डा0सुभाष मुखोपाध्याय के "इनविट्रोफर्टीलाइजेशन" का श्रेय विदेशी ले गए। भारत और पश्चिम बंगाल सरकारों के दबावों में, जो कि निश्चित रूप से अंतर्राष्ट्रीय मेडिकल माफिया के दबाव में होंगें, १६ जून १६८१ को उन्होनें आत्महत्या कर ली थी। भारत में तो मरना ही पड़ेगा। याद करो भारतीय मेडिकल एसोसिएशन के उस अध्यक्ष को जिसके यहॉ से वर्ष २०१० में करोड़ों में रुपए, किलो में सोना और मनों में चांदी बरामद हुई थी और इसके बाद भी वही भ्रष्ट व्यक्ति अंतरराष्ट्रीय मेडिकल एसोसिएशन का अध्यक्ष बना था। आप सोच सकते हैं एलोपैथी माफिया क्या है और इनमें कितनी व्यासायिक शुचिता है!

ऐसा लगता है कि भारत का संपूर्ण तंत्र विदेश में कहीं कोरोना के टीके का आविष्कार सुनिश्चित होने का की प्रतीक्षा कर रहा है और लागत से कई गुना अधिक मूल्य पर खरीद कर देश की बजाए अपनी अलमारियों को भरने का सामान कर रहा है। अन्यथा इतना तो कहते: – स्वामी रामदेव जी! ट्रायल नहीं भी हुआ है और आपने दावा कर ही दिया है तो रोकिए! हम भी सौ दिन ट्रायल करते हैं और अगर आप की दवा कारगर होती है, तो सरकार आपका सारा उत्पाद खरीद कर जनता को मुफ्त बांटेगी! क्यों नहीं हुआ ऐसा? इसका जवाब जिम्मेदार लोगों को देना है!!!

पैर के अंगूठे के नाखून पर क्रिकेट बॉल लगने से काले पड़े नाखून वाले खिलाड़ी को सभी एलोपैथिक चिकित्सकों ने महीने भर से पूर्व खेलने लायक बनाने से मना किया। उसी को आयुर्वेदिक लेप से 15 वें दिन नए नाखून के साथ फुटबॉल खेलते मैनें देखा है। आयुर्वेदिक चिकित्सा कम नहीं हैं। यह अकिंचन सलक्षण कोरोनाग्रस्त होकर मात्र आयुर्वेदिक चिकित्सा से ठीक होकर आवास में क्वारण्टाइन हुआ यह संपादकीय लिख रहा है। आयुर्वेद आप्त ऋषियों द्वारा दी गई चमत्कारिक सर्वसुलभ विद्या है। जय आयुर्वेद!

– कमल

प्रार्थना-विषय

सदसस्पतिमद्‌भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् ।

सनिं मेधामयासिषꣳ स्वाहा ।।५२।। -यजुः० ३२।१३

व्याख्यान- हे सभापते ! विद्यामय न्यायकारिन् ! सभासद् सभाप्रिय ! सभा ही हमारा न्यायकारी राजा हो, ऐसी इच्छावाला हमको आप कीजिए । किसी एक मनुष्य को हम लोग राजा कभी न बनावें, किन्तु [सभा से ही सुखदायक] आपको ही हम लोग सभापति=सभाध्यक्ष= राजा मानें । आप "**अद्भुतम**" अद्भुत, आश्चर्य, विचित्र शक्तिमय हैं तथा "**प्रियम्**" प्रियस्वरूप ही हैं, इन्द्र जो जीव, उसको, "**काम्यम्**" कमनीय (कामना के योग्य) आप ही हैं । "**सनिम्**" सम्यक् भजनीय और सेव्य भी जीवों के आप ही हैं । "**मेधाम्**" विद्या, सत्यधर्मादि धारणावाली बुद्धि को हे भगवन् ! मैं "**अयासिषम्**" याचता हूँ, सो आप कृपा करके मुझको देओ । "**स्वाहा**" यही "**स्व**" स्वकीय वाक् "**आह**" कहती है कि एक ईश्वर से भिन्न कोई जीवों को सेव्य नहीं है । यही वेद में ईश्वराज्ञा है, सो सब मनुष्यों को अवश्य मानने योग्य है ।।५२।।

स्तुति-विषयः

यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते ।

तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ।।५३।। -यजु० ३२।१४

व्याख्यान-हे सर्वज्ञाग्ने ! परमात्मन् ! "**यां मेधाम्**" जिस विज्ञानवती, यथार्थ धारणावाली बुद्धि को "**देवगणाः**" देवसमूह (विद्वानों के वृन्द) "**उपासते**" धारण करते हैं तथा यथार्थ पदार्थविज्ञानवाले "**पितरः**" पितर जिस बुद्धि के उपाश्रित होते हैं, उस बुद्धि के साथ "**अद्य**" इसी समय कृपा से "**माम् मेधाविनम् कुरु**" मुझको मेधावी कर । "**स्वाहा**" इसको आप अनुग्रह और प्रीति से स्वीकार कीजिए, जिससे मेरी सब जड़ता दूर हो जाए ।।५३।।

—आर्याभिविनय से

१५ अगस्त के पावन पर्व पर हमारे सभी पाठकों एवं शुभचिन्तकों का
हार्दिक अभिनन्दन

वेद-वचन

ईश्वर के नियम अटल

न यस्येन्द्रो वरुणो न मित्रो व्रतमर्यमा न मिनन्ति रुदः ।

नारातयस्वमिदं स्वस्ति हुवे देवं सवितारं नमोभिः ।। — ऋग्वेद २।३८।९

पदार्थः- हे मनुष्यो ! **(यस्य)** जिस जगदीश्वर के **(व्रतम्)** नियम को **(न)** न **(इन्द्रः)** सूर्य और बिजली **(न)** न **(वरुणः)** जल **(न)** न **(मित्रः)** वायु **(न)** न **(अर्यमा)** द्वितीय प्रकार का नियन्ता धारक वायु **(न)** न **(रुद्रः)** जीव **(न)** न **(अरातयः)** शत्रुजन **(मिनन्ति)** नष्ट करते हैं, **(तम्)** उस **(इदम्)** इस **(स्वस्ति)** सुखरूप **(सवितारम्)** समस्त जगत् के उत्पन्न करनेवाले **(देवम्)** दाता परमात्मा को **(नमोभिः)** सत्कर्मों से जैसे मैं **(हुवे)** स्तुति करूँ, वैसे तुम भी प्रशंसा करो ।

भावार्थः-इस संसार में कोई पदार्थ ईश्वर के तुल्य नहीं है तो अधिक कैसे हो और कोई भी इसके नियम का उल्लंघन नहीं कर सकता, इस कारण सब मनुष्यों को उसी ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करनी चाहिए ।

मेरे कर्म यज्ञिय हों

व्रतं च म ऋतवश्च मे तपश्च मे संवत्सरश्च मेऽहोरात्रेऽऊर्वष्ठीवे बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।। —यजुर्वेद १८।२३

पदार्थः- **(मे)** मेरे **(व्रतम्)** सत्याचरण के नियम की पालना **(च)** और सत्य कहना और सत्य उपदेश **(मे)** मेरे **(ऋतवः)** वसन्त आदि ऋतु **(च)** और उत्तरायण-दक्षिणायन **(मे)** मेरा **(तपः)** प्राणायाम **(च)** तथा धर्म का आचरण, शीत-उष्ण आदि का सहना **(मे)** मेरा **(संवत्सरः)** साल **(च)** तथा कल्प-महाकल्प आदि **(मे)** मेरे **(अहोरात्रे)** दिन-रात **(ऊर्वष्ठीवे)** जंघा और घोंटू **(बृहद्रथन्तरे)** बड़ा पदार्थ, अत्यन्त सुन्दर रथ तथा **(च)** घोड़े व बल **(यज्ञेन)** धर्मज्ञान आदि के आचरण और कालचक्र के भ्रमण के अनुष्ठान से **(कल्पन्ताम्)** समर्थ हों ।

भावार्थः-जो पुरुष नियम किये हुए समय में काम और निरन्तर धर्म का आचरण करते हैं,वे चाही हुई सिद्धि को पाते हैं ।

उपासना से कामना-पूर्ति

अधा हीन्द्र गिर्वण उप त्वा काम ईमहे ससृग्महे ।
उदेव ग्मन्त उदभिः ।। ४०६ ।।—सामवेद १।४।६।८

पदार्थः-(गिर्वणः) हे स्तुति रूप वाणी से सेवनीय ! **(इन्द्र)** परमधन परमात्मा! **(त्वा)** आपसे **(ईमहे)** हम याचना करते हैं, समीपता से प्राप्त करते है **(अथ हि)** तभी **(कामः)** अभीष्ट कामना को मनोरथों को **(उपससृग्हे)** समीप स्पर्श करते हैं । दृष्टान्त **(इव)** जैसे **(उदा-ग्मन्तः)** जलों के साथ चलनेवाले **(उदभिः)** जलों से स्पर्श करते हैं ।

भावार्थः- जो जलों के समीप जाते हैं वे जलों को जैसे प्राप्त होते वा जो जल में घुसते हैं वे जैसे सब ओर से तर हो जाते हैं, इसी प्रकार जब हम सर्वैश्वर्यशाली के समीप जाकर याचना करते हैं तब कामना तत्काल पूरी होती है। उस परमात्मा रूपी आनंद के महासागर में हम गोते लगावें और उस आनंद से स्वयं को आप्लवित करें।

इन्द्रिय-निग्रह

शुम्भनी द्यावापृथिवी अन्तिसुम्ने महिव्रते ।
आपः सप्त सुस्त्रुवुर्देवीस्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः ।।—अथर्ववेद ७।११७।१

पदार्थः- (शुम्भनी) शोभायमान **(द्यावापृथिवि)** सूर्य और पृथिवीलोक **(अन्तिसुम्ने)** अपनी गतियों से सुख देनेवाले और **(महिव्रते)** बड़े व्रत-नियमवाले हैं । **(देवीः)** व्यापनशील इन्दियाँ-दो कान, दो नथुने, दो आँखें और एक मुख **(सुस्रुवुः)** हमें प्राप्त हुई हैं **(ताः)** वे **(नः)** हमें **(अंहसः)** कष्ट से **(मुञ्चन्तु)** छुड़ावें ।

भावार्थः-जैसे सूर्य और पृथिवीलोक ईश्वर-नियम से अपनी-अपनी गति पर चलकर वृष्टि, अन्न आदि से उपकार करते हैं, वैसे ही मनुष्य इन्दियों को नियम में रखकर अपराधों से बचें। चिंतन करें कि इस ब्रह्माण्ड के विराट पिण्ड भी परमात्मा के पूर्ण अनुशासन में अपने पथ से जरा भी विचलित हुए बिना चलते हैं। उसी मनुष्य अपनी ज्ञानेन्द्रियों से समस्त विद्याओं को जान कर्मेन्द्रियों को पतन के मार्ग से विमुख कर परमात्मा के नियम वेद के अनुसार शुभ कर्मों व प्रभु स्तुति, उपासना, प्रार्थना में लगावे।

कहाँ है आत्मा ?

–डॉ. रामनाथ वेदालंकार

को ददर्श प्रथमं जायमानम्, अस्थन्वन्तं यदनस्था बिभर्ति ।

भूम्या असुरसृगात्मा क्व स्वित्, को विद्वांसमुपगात् प्रष्टुमेतत् ।। – ऋ.१ ।१६४ ।४

ऋषि: **दीर्घतमा औचथ्यः** । देवता **विश्वेदेवाः** । छन्द: **त्रिष्टुप्** ।

(कः) किसने **(जायमान)** [देह में] जन्म लेते हुए **(प्रथम)** [किसी] श्रेष्ठ को **(ददर्श)** देखा है, **(यत्)** जो **(अस्थन्वन्त)** अस्थियोंवाले [देह] को **(अनस्था)** बिन अस्थियोंवाला [होकर] **(बिभर्ति)** धारणा करता है ? **(भूम्याः)** पृथिवी [आदि तत्त्वों] से **(असुः)** प्राण **(और)** **(असृक्)** रक्त [आदि बने हैं, जो प्रत्यक्ष दीखते हैं, किन्तु] **(आत्मा)** आत्मा **(क्व स्वित्)** भला कहाँ [है] ? **(कः)** कौन **(एतत्)** यह **(प्रष्टु)** पूछने के लिए **(विद्वांसं)** विद्वान् के **(उपगात्)** पास गया है ?

तुम कहते हो कि शरीर से पृथक कोई आत्मा नाम की वस्तु है, जो शरीर में जन्म लेकर स्वयं बिन अस्थियोंवाली होती हुई भी अस्थियोंवाले इस शरीर को धारण करती है । उसे तुम अणु-रूप भी मानते हो । पर यह कैसे सम्भव है ? बिन अस्थियों वाली सूक्ष्म अणु-रूप वस्तु स्थूल अस्थि-पञ्जर को कैसे धारण कर सकती है ? पृथिवी, अप्, तेज, वायु, आकाश इन पञ्च तत्त्वों से प्राण और रक्त आदि बने हैं, जो प्रत्यक्ष दीखते हैं, किन्तु आत्मा कहाँ है ? वह तो कहीं दिखाई नहीं देता । दृष्टिगम्य न होने पर भी उसकी सत्ता है तो कैसे, यह पूछने के लिए कौन किसी विद्वान् के समीप गया है ?

भाइयो ! विद्वान् शास्त्रकारों की बात मैं तुम्हें बताता हूँ । यह आवश्यक नहीं है कि जिस वस्तु का चक्षु आदि इन्द्रियों से प्रत्यक्ष न हो सके, उस वस्तु की सत्ता ही न हो । ऋषियों ने बताया है कि इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दु:ख और ज्ञान आत्मा के लिंग है । इन लिंगों द्वारा अनुमान प्रमाण से आत्मा की सिद्धि होती है। शरीर, इन्द्रियों आदि से पृथक आत्मा नाम की कोई वस्तु होनी चाहिए, जो जिस वस्तु से पहले सुख मिला होता है उसकी इच्छा करती है, जिससे दु:ख मिला होता है उससे द्वेष करती है, जिससे सुख या दु:ख मिला होता है उसे प्राप्त करने या निवारण करने का प्रयत्न करती है, जिससे सुख या दु:ख मिला होता है उसे पुन: पाकर पुन: पाकर पुन: सुख या दु:ख का अनुभव करती है और जो पूर्व-ज्ञात वस्तु की स्मृति या प्रत्यभिज्ञा करती है । यदि कोई नित्य आत्मा न होती तो पूर्वानुभव के आधार पर यह इच्छा, द्वेष प्रयत्न आदि मनुष्य को क्योंकर हो सकता था ? अनुमान के अतिरिक्त शब्द-प्रमाण से भी आत्मा सिद्ध होता है, क्योंकि आप्त शस्त्रकार एक स्वर से आत्मा की सत्ता को प्रमाणित करते हैं । उनका कथन है कि एक अज शाश्वत आत्मा है, जो शरीर के मर जाने पर भी मरता नहीं । इसके अतिरिक्त "आत्मा प्रत्यक्षगम्य नहीं है" यह कथन भी सत्य नहीं है, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य मन से अपनी आत्मा का प्रत्यक्ष करता है ।

अत: हे मित्रो ! आत्मा है, अवश्य है, निश्चित रूप से है । वह स्वरूप से सूक्ष्म है, अतएव बिन अस्थियोंवाला होता हुआ भी इस स्थूल अस्थि-चर्म-मय देह को धारण करता है । उस पर विश्वास करो; उसके नित्यत्व, पुनर्जन्म एवं मोक्ष पर भी विश्वास करो ।

दयानंद कौन है

(सृष्टि–सृजन–सत्य–प्रतिपादक) –कमल किशोर आर्य

सृष्टि क्या है? उत्तर मिलता है–जो कुछ भी दृश्य जगत हमें दिखाई देता है, वह सब सृष्टि है। यह संपूर्ण ब्रह्मांड सृष्टि है जिसमें जड़ और चेतन जगत सम्मिलित है। चेतन जगत में मनुष्य के अलावा इस प्रकार चिंतन और कोई जीव करता नहीं है, अतः मनुष्य की उत्पत्ति भी इस सृष्टि पर विचार करते समय मुख्य विचारणीय बिंदु है। अर्थात् यह भौतिक जगत कैसे बना और इसमें जीव जगत और मुख्यतः मनुष्य कैसे बना– इस पर बहुत चिंतन हुआ है। सृष्टि रचना पर विचार से पूर्व प्रश्न उठता है कि सृष्टि का विस्तार कितना है? कहने को सभी मत संप्रदाय और चिंतक कह देते हैं कि सृष्टि अनंत है। किंतु सामान्यतः इस अनंत शब्द को पढ़ने या सुनने पर इस सृष्टि की अनंतता का बोध सबको नहीं होता। क्यों न पहले इसका बोध किया जाय!

अमूर्त दार्शनिक चिंतन को आधुनिक वैज्ञानिक और विज्ञान का अनुसरण करने वाले लोग मानते नहीं है। वे हर चीज का ऐसा भौतिक प्रमाण मानते हैं जो उनके मापकों पर चढ़कर भौतिक प्रेक्षण प्रदान करें, जिससे कि वे निष्कर्ष निकाल सकें। सृष्टि के मामले में भी विभिन्न विचारों व प्रमाणों को नकारते हुए वैज्ञानिकों ने जो कुछ मापा जा सका, उन मापों और उनके अब तक पुष्ट हो चुके आँकड़ों के अनुसारः

हमारी पृथ्वी का औसत व्यास १२,७४२ किलोमीटर (७,६१८ मील) और औसत त्रिज्या लगभग ६,३७१ किलोमीटर (३,९५६ मील) है। चंद्रमा का औसत व्यास ३,४७४.२ किलोमीटर है और त्रिज्या १७३७.१ किलोमीटर है। उसकी धरती से औसत दूरी ३,८४,४०३ किलोमीटर (२,३८,८५७ मील) है! सूर्य का औसत व्यास लगभग १३ लाख ९० हजार किलोमीटर है जो पृथ्वी से लगभग १०९ गुना अधिक है और त्रिज्या ६,९५,000किमी है। सूर्य से पृथ्वी की औसत दूरी लगभग १४,९६,००,००० किलोमीटर या ९,२६,६०,००० मील है। इन मानों से हमें सुअवगत तीन खगोलीय पिण्डों की विराटता और उनके बीच की दूरी का पता चलता है।

खगोलीय दूरियॉ अतिविराट् हैं। इनके मापन की इकाईयॉ भी विराट बनायी गयी है। प्रकाश की चाल या गति एक नियतांक है। निर्वात में इसका सटीक मान २९,९७,९२,४५८ मीटर प्रति सेकेण्ड है जिसे प्रायः तीन लाख किमी प्रति सैकिण्ड कह दिया जाता है। वस्तुतः सभी विद्युतचुम्बकीय तरंगों (जैसे रेडियो तरंगें, गामा किरणे, प्रकाश आदि) समेत, गुरुत्वीय–सूचना का वेग भी इतना ही है। सूर्य से पृथ्वी पर प्रकाश को आने में ८.३ मिनट का समय लगता है। एक प्रकाश वर्ष ९४,६0,७३,0४,७२,५८0.८ (चौरानबे खरब साठ अरब तिहत्तर करोड़ चार लाख बहत्तर हजार पॉच सौ अस्सी दशमलव आठ) किमी या लगभग ५८,७८,६२,५३,७३,१८३.६१ (अट्ठावन खरब अठहत्तर अरब बासठ करोड़ तिरेपन लाख तिहत्तर हजार एक सौ तिरासी दशमलव छः

एक) मील के बराबर होता है। इससे भी विराट इकाई 'गीगा प्रकाश वर्ष' १,००,००,००,००० अर्थात् एक अरब प्रकाश वर्ष के बराबर होती है।

हमारी पृथिवी से हमारा निकटतम तारा, प्रॉक्सिमा सेन्टॉरी बी ४.२४२ प्रकाश वर्ष दूर एवं हमारी निकटतम पड़ोसी आकाशगंगा , एण्ड्रोमेडा गैलेक्सी पच्चीस लाख प्रकाशवर्ष दूर है अर्थात २६,६७,६२,४५८मीटर प्रति सेकेण्ड की चाल से प्रकाश को वहाँ पहुँचने में २५ लाख वर्ष लगते हैं ये। दूरियॉ त्रिकोणमितीय दिग्भेद पर आधारित है; जो कि सिताऱों के बीच दूरी नापने का प्राचीन तरीका है।

अभी तक हम धरती से नौ अरब प्रकाश वर्ष दूर एक तारे को देख पाए हैं जो सूर्य से कई गुना बड़ा है एवं जिसकी चमक सूर्य से लाखों गुना अधिक है। खगोल वैज्ञानिक १३,३६,००,००,००० अर्थात १३ अरब ३६ करोड़ प्रकाश वर्ष दूर की आकाशगंगा को देख चुके हैं। अर्थात् प्रकाश १३ अरब ३६ करोड वर्ष में जितनी दूर तक गति करता है इतनी दूर तक तो मानव आकाशगंगाओं को देख चुका है।

अब आप इस सृष्टि के विस्तार के बारे में अपने चिंतन को वास्तव में विस्तार दे सकते हैं। क्या इस विराट् सृष्टि का रचयिता कोई है? वैज्ञानिक सीधी तरह से नकारते हैं और भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में श्रेष्ठता का मानदंड बन चुके वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंस ने भी परमात्मा के अस्तित्व को नकारा है और यह कहा है कि नियमों में बंधा हुआ यह ब्रह्मांड निर्माण और क्षय को प्राप्त हो रहा है। ईश्वर जैसे किसी सत्ता का अस्तित्व मानने की आवश्यकता नहीं है ना ही इसके प्रमाण अभी तक उपलब्ध हुए हैं।

प्रत्येक तथ्य को भौतिक रूप से अनुभूत होने वाले उपकरणों और मापको में दर्ज होने पर ही उनके अस्तित्व को स्वीकारने वाले इस वैज्ञानिक वर्ग से पूर्व, सृष्टि की रचना के बारे में चिंतक क्या कहते हैं–इस पर विचार आवश्यक है। चिंतकों का अनुसरण करने वाले बड़े वर्ग इस विश्व में हिंदू, मुस्लिम और ईसाई हैं। अल्प मात्रा में बौद्ध जैनादि भी हैं। इनका दर्शन सृष्टि रचना के विषय में क्या कहता है?

हिन्दू पुराणों के अनुसार ब्रह्मा दिन में सृष्टि का निर्माण करते हैं और रात्रि में उसे विलीन करते है। इसमें विश्व के समस्त पदार्थ एक स्थान पर केन्द्रित हो जाते हैं। लेकिन बह्मा की प्रत्येक 100 वर्ष की आयु पूर्ण होने पर महाप्रलय होता है जबकि विश्व की प्रत्येक वस्तु अपघटित होकर बह्मा में विलिन हो जाती है। इसके बाद पुनः सृष्टि का प्रारम्भ बह्मा करता है। इस प्रकार नैमित्तिक एवं महाप्रलय तथा सृष्टि के निर्माण की प्रक्रिया का चक्र चलता रहता है। विभिन्न पुराणों में अपने अपने मत के अनुसार पुराणकारों ने सृष्टि रचना में अपने इष्ट देव को प्रधान रचयिता रखा है जिनमें मुख्य ब्रह्मा, विष्णु और महेश है। इन मतों के अनुसार सृष्टि रचयिता मुख्यतः इनका अपना देवता है और गौण रूप से अन्य का सहयोग भी सम्मिलित होता है। मानव निर्माण के बारे में ये बतमाते हैं कि देवताओं की अदिति, तो दैत्यों की दिति से उत्पत्ति हुई।

दानवों की दनु से तो राक्षसों की सुरसा से, गंधर्वों की उत्पत्ति अरिष्टा से हुई। इसी तरह यक्ष, किन्नर, नाग आदि की उत्पत्ति मानी गई है। ब्रह्म से ब्रह्मा की उत्पत्ति हुई और ब्रह्मा ने स्यवं को दो भागों में विभक्त कर लिया। उनका एक रूप पुरुष स्वायंभुव मनु और एक भाग स्त्री यानी शतरूपा था। उनसे सप्तचरुतीर्थ के पास वितस्ता नदी की शाखा देविका नदी के तट पर मनुष्य जाति की उत्पत्ति हुई। सृष्टि के सम्बन्ध में यह वर्णन भी आता है– प्रजापति ने एक से अनेक होने की इच्छा की। उसके लिए उसने तप किया। जिससे क्रमशः धूप, अग्नि, प्रकाश आदि की उत्पत्ति हुई। उसी के अश्रुबिन्दु के समुद्र में गिर जाने से पृथ्वी की उत्पत्ति हुई अथवा उसके तप से ब्राह्मण व जल की उत्पत्ति हुई, जिससे सृष्टि बनी। उपनिषद् युग में कही तो असत्, मृत्यु, क्षुधा आदि से जल, पृथ्वी आदि की उत्पत्ति मानी गयी है कही बह्मा से और कहीं अक्षर से सृष्टि की रचना मानी गयी है। इसके विपरीत वे सभी जो इनके बताये पथ का अनुकरण करते हैं, उसे ब्रह्मा से मिला देते हैं. जिस प्रकार किसी गाँव या नगर के पास अनेक रास्ते होते हैं, किन्तु वे सभी उसी गांव में पहुंचा देते हैं, उसी तरह से ब्राह्मणों द्वारा दिखाये सभी पथ ब्रह्मा से जा मिलते हैं। सृष्टि रचना के पौराणिक आख्यान ऐसे हैं जिनके पीछे कोई तर्क युक्ति दिखाई नहीं देती, सत्य दिखाई नहीं देता और ऐसा लगता है मानो किसी ने भांग के नशे में सृष्टि रचना का वर्णन कर दिया है।

सूर्यसिद्धांत जैसे कुछ ग्रंथों में सृष्टि की कुल आयु भी दे रखी है और सृष्टि और प्रलय का निश्चित समय भी बताया गया हैं। खंड प्रलय के बारे में भी यह ग्रंथ बताता है। किन्तु इस ग्रंथ में अविश्वसनीय बातें भी लिख रखी हैं, जिनके चलते इसमें लिखी बातें अन्य प्रमाण की मांग भी करती हैं।

न्याय और वैशेषिक जैसे आस्तिक दर्शनों में ईश्वर को सृष्टि का रचयिता माना गया है। नैयायिकों का कहना है कि सृष्टि का कोई कर्ता अवश्य होना चाहिए क्योंकि यह कार्य है। कोई भी वैज्ञानिक कार्य के पीछे कारणों का निषेध नहीं कर सकता। बात सिर्फ इंद्रिय सुलभता और अतीन्द्रियता की है।

कुछ ईश्वरवादी पाश्चात्य विद्वान कहते है कि यदि ईश्वर न होता तो उसके अस्तित्व की भावना ही हमारे हृदय में जागृत न होती। वैदिक जनों का कहना है कि बिना किसी सचेतन नियन्ता के सृष्टि की इतनी अद्‌भुत व्यवस्था सम्भव नहीं थी।

जैन मत संसार को शाश्वत, नित्य, अनश्वर, और वास्तविक अस्तित्त्व वाला मानता है। पदार्थों का मूलतः विनाश नहीं होता, बल्कि उसका रूप परिवर्तित होता है। इस मत के अनुसार ब्रह्माण्ड की आधारभूत संरचना चतुष्फलक आकार की थी। पदार्थ पाँच प्रकार के हैं: द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य तथा अभाव। द्रव्य वह है जिसमें गुण रहते हैं। कुमारिल के अनुसार यह ग्यारह प्रकार का है: पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, आत्मा, मन, माल, दिक्, अंधकार और शब्द। इनमें प्रथम नौ द्रव्य वैशेषिक दर्शन से ही लिए गए हैं। महावीर ने अंधकार तथा शब्द को भी द्रव्य की ही मान्यता दी है। गुणों के विषय में भी महावीर पंर वैशेषिक का पर्याप्त प्रभाव प्रतीत होता है।

प्रशस्तपाद की तरह वे भी चौबीस गुण मानते हैं। ये हैं रूप, रस, गंध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, गुरुत्व, द्रवत्व, स्नेह, ज्ञान, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुख, संस्कार, ध्वनि, प्राकट्य और शक्ति। गुणों की इस सूची में उन्होंने प्रशस्तवाद के शब्द के स्थान पर ध्वनि तथा धर्म और अधर्म के स्थान पर प्राकट्य और शक्ति रखा है। जैन मान्यता में विश्व का चक्र उत्सर्विणी और अवसर्पिणी कालों के रूप में निरन्तर चलता रहता है। अवसर्पिणी काल के अन्त में ४६ दिन में खण्ड प्रलय के समान स्थिति बनती है। लेकिन इसके बाद ३५ दिन में जीवन पुनः पूर्ववत् हो जाता है। निष्कर्षतः जैन मान्यता है कि सृष्टि में खंड प्रलय ही होगा विश्व का अन्त नही। विश्व अनादि और अनन्त है जिसमें सृष्टि व खंड प्रलय का चक्र चलतारहता है। जैन–दर्शन ईश्वर की सत्ता सृष्टि के कर्त्ता रूप में स्वीकार नहीं करता अर्थात् ईश्वरजगत का कर्ता, धर्ता, हर्ता नहीं है। इसमें ईश्वर का अर्थ है विकार व सारे बन्धनों से रहित परमात्मा। ईश्वर एक न होकर अनेक है और कई हो सकते है। जैन धर्म में कर्म–बन्धन से मुक्त हुए जीव ही ईश्वर है।

बौद्ध धर्म संसार की उत्पत्ति तथा प्रलय नहीं मानता । संसार में वस्तुएँ उत्पन्न तथा नष्ट होती रहती है। जीवों के जन्म मरण का प्रवाह चलता रहता है। किंतु समग्र संसार की न तो उत्पत्ति ही होती है, न विनाश। बुद्ध ने ब्रह्मजाल सूत्त में सृष्टि का निर्माण कैसा हुआ, ये बताया है। सृष्टि का निर्माण होना और नष्ट होना बार–बार होता है। ईश्वर या महाब्रह्मा सृष्टि का निर्माण नही करते। क्योंकि दुनिया प्रतीत्यसमुत्पाद अर्थात् कार्यकरणभाव के नियम पर चलती है। भगवान बुद्ध के अनुसार, मनुष्यों के दुःख और सुख के लिए कर्म जिम्मेदार है, ईश्वर या महाब्रह्मा नही। पर अन्य जगह बुद्ध ने सर्वोच्च सत्य को अवर्णनीय कहा है। अनेक तर्कों द्वारा उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि ईश्वर को जगत् का कारण मानना युक्तिसंगत नहीं है। ईश्वराश्रित धर्म कल्पनाश्रित है, इसलिये ऐसे धर्म का कोई उपयोग नहीं है। बुद्ध का तर्क था कि ईश्वर का सिद्धान्त सत्याश्रित नहीं है।

जैन और बौद्ध दोनों मतों में प्रलय का कोई विशेष वर्णन नहीं है। किंतु मोक्ष प्राप्ति के बाद सिद्धशिला या परमात्मा बन जाने की बात इनमें प्राप्त होती है।

ईसाई मत की पुस्तक बाइबल के अनुसार परमेश्वर ने पहले दिन ब्रह्माण्ड और पृथ्वी, दूसरे दिन आकाश और वायुमण्डल, तीसरे दिन सूखी भूमि और सभी पौधे के जीव, चौथे दिन सितारों और सूरज और चन्द्रमा सहित स्वर्गीय निकायों का गठन किया, पांचवे दिन पक्षियों और जल जीवों, और छठे दिन सभी जानवरों और मनुष्य की रचना स्वयं परमेश्वर के स्वरूप में की। मनुष्य का दायित्व बताया कि वह पृथ्वी की देखरेख करे और उसे अपने नियन्त्रण में रखे। सारी रचना छह दिनों में अपनी सारी विशाल सारिणी और आश्चर्यजनक सुन्दरता के साथ पूरी हो गई थी। परमेश्वर ने मनुष्य को पृथ्वी की मिट्टी से रचा, जिसे उसने पहले ही बना दिया था। मनुष्य के रचने के पश्चात् परमेश्वर ने उसमें जीवन के श्वास को फूँक दिया। परमेश्वर ने आदम को गहरी

नींद में डाल दिया और फिर उसने हव्वा को उतनी ही देखभाल के साथ रचा जितनी से उसने आदम को रचा था। हव्वा को उसने आदम की पसली से रचा था। बाईबिल में नूंह के समय जल से खंड प्रलय का प्रसंग आता है। पूर्ण प्रलय के विषय में बाइबल मौन है। हॉ, यह अवश्य कहती है कि अंत में मरके सब को खुदा के बेटे के पास आना पड़ेगा। यह मत अरब से उपजे तीनों चाचाजात मतों यहूदी, ईसाई और इस्लाम का समझा जा सकता है। क्योंकि बाइबल की तस्दीक कुरान करती है और बाइबल के आरंभिक अंश यहूदियों के लिए माने जाते हैं।

धर्म पर आधारित सृष्टि और प्रलय संबंधी इन उपर्युक्त बातों को आधुनिक विज्ञान नहीं मानता है। इसका मुख्य कारण वेद विरुद्ध मतों में सृष्टि रचना और प्रलय के संबंध में जो अतिशयोक्ति पूर्ण असत्य वर्णन है–वह आरंभिक खगोल विदों के समय से ही मिथ्या प्रमाणित हो रहा है। बात यहॉ तक बढ़ी कि यहूदी और ईसाइयों ने अंतरिक्ष का परीक्षण करके बताए गए सिद्धांतों को धर्म के विरुद्ध मानने का फतवा जारी कर खगोलविदों को दंडित भी किया है। ऐसे में आधुनिक वैज्ञानिक ढकोसला मानकर यदि किसी भी धर्म का खंडन करें तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए। हॉ यह निश्चित है कि कुछ मतों की धांरणाओं को खारिज नहीं किया जाना चाहिए; विशेषकर उन मतों को,जिनसे सहस्राब्दियों पहले शून्य, दशमलव और खगोल का प्रमाणिक ज्ञान मिला; जिसने आधुनिक खगोल विज्ञान की नींव रखी थी, और जहाँ आज भी वेधशालाएं पाई जाती हैं! यह बात निश्चितरूपेण भारतीय आर्ष दर्शन के लिए लिखी गई है।

आगे बढ़ने से पहले आधुनिक विज्ञान सृष्टि रचना और प्रलय के बारे में क्या अवधारणा देता है–इस पर विचार करते हैं। किसी विस्फोट और क्रिस्टलीकरण के द्वारा सृष्टि रचना की सर्वप्रथम कल्पना १२२१ ईस्वी में एक अंग्रेज धर्माचार्य डी ल्यूस ने की थी। अंधेरी रात में आकाश का निरीक्षण कर सीमित ब्रह्मांड की परिकल्पना जोहानस केपलर ने १६१० ईस्वी में की थी। महान् भौतिकविद् न्यूटन ने ब्रह्मांड में विशाल स्तर पर गतियों की बात कही थी। बीसवीं शताब्दी के आरंभ में कुछ छिटपुट अंतरिक्ष प्रेक्षणों एवं अल्बर्ट आइंस्टीन के सापेक्षता के सिद्धांत ने कुछ--कुछ आधारशिला बिग बैंग सिद्धांत की रखी थी, जिसकी सहायता अलेक्जेंडर फ्रीडमैन ने भी ली थी। जॉर्जेज लेमैत्रे नामक बेल्जियम के एक पादरी ने सापेक्षता सिद्धांत एवं फ्रीडमैन के कार्य की सहायता से अंतरिक्ष में प्रेक्षित आकाशगंगा और निहारिका की विशेष प्रतिव हलचल सहित ब्रह्मांड के निरंतर विस्तारित होने की व्याख्या की थी और १६३१ में उन्होंने एक 'प्रागणु' में विस्फोट से ब्रह्मांड के निर्माण की परिकल्पना प्रस्तुत की जो आगे विभिन्न खगोलविदों द्वारा निरंतर पुष्ट की जाती रही है। यद्यपि महान भौतिक विद स्टीफन हॉकिंग ने साठ के दशक में इस विचार को कारगर नहीं बताया। अभी हाल में महान वैज्ञानिक स्टीफन हाकिंग ने अपनी पुस्तक Grand Design में कहा है कि सृष्टि, ब्रम्हांड व जीवन का निर्माण (Creation) स्वतः भौतिकशास्त्र के नियमों के अनुसार हुआ है। यह तो पता नहीं कि भगवान् है कि नहीं! लेकिन अगर स्टीफन हाकिंग की बात माना जाय तो सृष्टि या ब्रम्हांड के निर्माण में भगवान् की कोई

भूमिका नहीं है। अर्थात् आधुनिक विज्ञान जगत नियमों को मानता है, नियामक को नहीं।

आधुनिक खगोलविदों में आज भी 'बिगबैंग सिद्धांत' सृष्टि रचना का सर्वाधिक मान्य सिद्धांत है। इस सिद्धांत की पुष्टि के लिए जेनेवा के समीप फ्रान्स और स्विट्जरलैण्ड की सीमा पर भूमि की सतह से लगभग १०० मीटर नीचे स्थित सुरंग के अन्दर दो बीम पाइपों में दो विपरीत दिशाओं से आ रही ७ टेरा एलेक्ट्रान वोल्ट् की प्रोट्रॉन किरण–पुंजों (बीम) को आपस में संघट्ट (टक्कर) कराने का उद्देश्य यह था कि इससे वही स्थिति उत्पन्न की जाय जो ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के समय बिग बैंग के रूप में हुई थी। ज्ञातव्य है कि ७ टेरा एलेक्ट्रान वोल्ट्उर्जा वाले प्रोटॉन का वेग प्रकाश के वेग के लगभग बराबर होता है। एल एच सी (लार्ज हेडरॉन कोलाइडर जिसे महामशीन कहा गया है) की सहायता से किये जाने वाले प्रयोगों का मुख्य उद्देश्य स्टैन्डर्ड मॉडेल की सीमाओं एवं वैधता की जाँच करना है। स्टैन्डर्ड मॉडेल इस समय कण–भौतिकी का सबसे आधुनिक सैद्धान्तिक व्याख्या या मॉडल है। १० सितंबर २००८ को पहली बार इसमें सफलता पूर्वक प्रोटान धारा प्रवाहित की गई। इस परियोजना में विश्व के ८५ से अधिक देशों नें अपना योगदान किया है। परियोजना में ८००० भौतिक वैज्ञानिक कार्य कर रहे हैं जो विभिन्न देशों, या विश्वविद्यालयों से आए हैं। प्रोटॉन बीम को त्वरित (accelerate) करने के लिये इसके कुछ अवयवों (जैसे द्विध्रुव (डाइपोल) चुम्बक, चतुर्ध्रुव(quadrupole) चुम्बक आदि) का तापमान लगभग १.९ केल्विन या –२७१.२५०सेन्टीग्रेड तक ठंडा करना आवश्यक होता है ताकि जिन चालकों (conductor) में धारा बहती है वे 'अतिचालकता' (superconductivity) की अवस्था में आ जायं और ये चुम्बक आवश्यक चुम्बकीय क्षेत्र उत्पन्न कर सकें। इस प्रयोग में 'हिग्स बोसोन कण' जिन्हें 'गॉड पार्टिकल' नाम दिया गया– के प्रकट होने तथा पहचाने जाने की उम्मीद है, जिसके अस्तित्व की कल्पना अब तक सिर्फ गणनाओं द्वारा ही की जाती रही है। इस गॉड पार्टिकल को ब्रह्माण्ड निर्माण की सूक्ष्म और आधारभूत इकाई माना गया है। इसके द्वारा द्रव्य एंव उर्जा के संबधों को जानने की कोशिश का जा रही है। इससे ब्रह्मांड के उत्पत्ति से जुड़े कई रहस्यो पर से भी पर्दा उठने की आशा है।

किंतु कई शताब्दियों के प्रयास के बाद भी सृष्टि रचना के संबंध में अभी तक के सभी आधुनिक सिद्धांतों के साथ ही एक प्रश्न जुड़ा रहता है कि **'उससे पूर्व क्या था?'**इसका जवाब अभी तक आधुनिक विज्ञान को नहीं मिला है।

एक विडंबना यह है कि सृष्टि का निर्माण मनुष्य के निर्माण से पहले हुआ। अतः मनुष्य ना तो उसका दृष्टा था और ना ही भूतकाल में जाकर के वह प्रक्रिया देख सकता है। सामान्य घरों में बालक एक पंखा कैसे चलता है–उसे चलता हुआ देखकर तब तक नहीं बता सकता जब तक पंखे का सिद्धांत उसे समझाया नहीं जाए। अतः जो कार्य सम्मुख नहीं हुआ, उसके विषय में उसके कर्त्ता से पूछना चाहिए।

दुर्भाग्य यह है कि किसी बड़े से बड़े भौतिक वैज्ञानिक को एक पेनड्राइव पड़ी मिल जाए,

जिसमें काफी डाटा हो तो वह हम मानने को तैयार नहीं होगा कि इसका कोई बनाने वाला नहीं है। किंतु इस अनंत ब्रह्मांड में करोड़ों स्थानों पर एक ही नियम देख कर उसके नियामक को मानने के लिए ये तैयार नहीं है। फिर वैज्ञानिक लोग किसी भी अतींद्रिय सत्ता को नहीं मानते।

भारत के इतिहास में कहीं भी ऐसा वर्णन नहीं आया की प्राचीन ऋषियों के समय का कोई उपकरण हमें प्राप्त हुआ हो या कोई कल कारखाना किसी उत्खनन में अवशेष के रूप में भी प्राप्त हुआ हो। हाँ, कुछ वेधशाला है और कुछ अन्य स्थापत्य भारत में मिलता है जिनका संबंध खगोल विज्ञान से है। यहां यह चिंतनीय विषय है कि आधुनिक इंद्रियगत साधनों के अलावा अतींद्रिय सत्ता एवं नियमों की जानकारी के लिए कोई अतींद्रिय मार्ग है अथवा नहीं। यदि नहीं तो भारतीय मनीषियों ने विश्व को इतना ज्ञान कैसे दे दिया– इस प्रश्न का उत्तर अतींद्रिय मार्ग की पुष्टि करता है। आधुनिक विज्ञान को अतीन्द्रिय मार्ग के अनुभव का लाभ उठाना चाहिए।

आश्चर्य यह है कि जिस देश ने दुनिया को शून्य, दशमलव, खगोल विद्या और ज्योतिष विद्या सिखलाई उस देश की बात पिछले हजारों सालों में कोई भी ढ़ता पूर्वक नहीं उठा पाया, जिसका परिणाम यह हुआ है कि उपर्युक्त विभिन्न संप्रदायों और आधुनिक वैज्ञानिक भी सृष्टि के निर्माण और प्रलय के विषय में कोई भी निश्चयात्मक सिद्धांत नहीं दे पाये। किसी को को मार्ग दिखाई नहीं दे रहा है।

अवरुद्धता की इस स्थिति में १६वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में एक महान् भारतीय चिंतक ने विभिन्न विषयों के साथ सृष्टि रचना के विषय में भी वेद और अपने पूर्वज ऋषियों द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों को पुनर्जीवित करते हुए अपना मत प्रतिपादित किया और प्रश्नोत्तर रूप में उन शंकाओं का जवाब भी दिया जिनका उत्तर अन्य किसी के पास नहीं है। पहले इस मत पर विचार करते हैं: –

प्रत्येक कार्य का एक कर्त्ता अवश्य होता है– यह सृष्टि में सर्वत्र देखा जा रहा है। किंतु प्राकृतिक कार्य के पीछे के कर्त्ता को देखना, पता नहीं क्यों,वैज्ञानिकों को नहीं भाता! पुष्पों में सुंदरता कौन भरता है? चूंकि पौधे में तो वह बुद्धिमत्ता देखने में नहीं आती कि वह स्वयं से पत्र, पुष्प और फल की रचना कर सकें! यदि नहीं मानते तो एक पुष्पी पादप को उखाड़ कर वहीं मिट्टी में रख दो, पता चल जाएगा। एक बैलगाड़ी या घोड़ा गाड़ी को चलाने के लिए चालक को लगाम पकड़कर बैठना पड़ता है और आधुनिक वाहन चलाने के लिए स्टीयरिंग पकड़ना पड़ता है। किंतु एक परमाणु में निश्चित दिशा में नाभि की परिक्रमा कर रहे इलेक्ट्रॉन से लेकर एक सौरमंडल में सूर्य की परिक्रमा कर रहे ग्रहों की निश्चित गति को देखकर उसके चालक का अनुमान कोई क्यों नहीं करता है? वैज्ञानिक या तो बिना कर्ता के कार्य होना सिद्ध करे या अमूर्त कर्ता को जाने!

(क्रमशः)

|| ओ३म् ||

स्वाध्याय

अथऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

वेदनित्यत्वविषयः–४ –डॉ0 रामनारायणजी शास्त्री

वेद की नित्यता पर विचार करते हुए जहाँ महर्षि दयानन्द सरस्वती ने व्याकरण तथा दर्शन शास्त्र के प्रमाण उपस्थापित किए हैं, वहीं अब स्वामीजी महाराज ईश्वर और वेद की नित्यता में साक्षात् वेद को ही प्रमाण रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं; जैसा कि पहले यह तथ्य हम पढ़ चुके हैं कि वेद सूर्य की भाँति स्वतः प्रमाण है। उसकी सत्ता व सत्यता, नित्यता के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। तो आईये! अब हम स्वामीजी के ही शब्दों में वेद से वेद के नित्य होने को समझने का प्रयत्न करते हैं।

"अत एव स्वयमीश्वरः स्वप्रकाशितस्य वेदस्य स्वस्य च सिद्धिकरं प्रमाणमाह–

स पर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्। कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यःसमाभ्यः ।।य0 अ040 ।मं0८।।

अस्यायमभिप्रायः–यः पूर्वोक्तः सर्वव्यापकत्वादिविशेषणयुक्त ईश्वरोऽस्ति, (सपर्य्यगात्) परितः सर्वतोऽगात् गतवान् प्राप्तवानस्ति, नैवैकः परमाणुरपि तद्व्याप्त्या विनास्ति, (शुक्रं) तद् ब्रह्म सर्वजगत्कर्त्तृ वीर्य्यवदनन्तबलवदस्ति, (अकायं) तत्स्थूलसूक्ष्म कारण शरीरत्रयसम्बन्धरहितम्, (अव्रणम्) नैवैतस्मिंश्छिद्रं कर्त्तुं परमाणुरपि शक्नोति, अतएव छेदरहितत्वादक्षतम्, (अस्नाविरं) तन्नाडीसम्बन्धरहितत्वाद् बन्धनावरणविमुक्तम्, (शुद्धं) तदविद्यादिदोषेभ्यः सर्वदा पृथग्वर्तमानम्, (अपापविद्धम्) नैव तत्पापयुक्तंपापकारि च कदाचिद् भवति, (कविः) सर्वज्ञः, (मनीषी) यः सर्वेषां मनसामीषी साक्षीज्ञातास्ति, (परिभूः) सर्वेषामुपरि विराजमानः, (स्वयम्भूः) यो निमित्तोपादानसाधारणकारणत्रयरहितः, स एव सर्वेषां पिता, नह्यस्य कश्चित् जनकः स्वसामर्थ्येन सहैव सदावर्तमानोऽस्ति, य एवंभूतः सच्चिदानन्दस्वरूपः परमात्मा (सः) सर्गादौ स्वकीयाभ्यः (शाश्वतीभ्यः)शाश्वतीभ्यो निरन्तराभ्यः (समाभ्यः) प्रजाभ्यो (याथातथ्यतः) यथार्थस्वरूपेणवेदोपदेशेन (अर्थान् व्यदधात्) विधत्तवानर्थाद्यदा यदा सृष्टिं करोति तदा तदा प्रजाभ्योहितायादिसृष्टौ सर्वविद्यासमन्वितं वेदशास्त्रां स एव भगवानुपदिशति। अत एव नैववेदानामनित्यत्वं केनापि मन्तव्यम्, तस्य विद्यायाः सर्वदैकरसवर्त्तमानत्वात्।

भाषार्थ–ऐसे ही परमेश्वर ने अपने और अपने किये वेदों के नित्य और स्वतः प्रमाण होने

का उपदेश किया है सो आगे लिखते हैं–

(स पर्यगात्) यह मन्त्र ईश्वर और उसके किये वेदों का प्रकाश करता है, कि जो परमेश्वर सर्वव्यापक आदि विशेषणयुक्त है सो सब जगत् में परिपूर्ण हो रहा है, उसकी व्याप्ति से एक परमाणु भी रहित नहीं है। सो ब्रह्म (शुक्रम्) सब जगत् का करने वाला और अनन्तविद्यादि बल से युक्त है, (अकायं) जो स्थूल, सूक्ष्म और कारण इन तीनों शरीरों के संयोग से रहित है, अर्थात् वह कभी जन्म नहीं लेता, (अव्रणं) जिसमें एक परमाणु भी छिद्र नहीं कर सकता, इसी से वह सर्वथा छेदरहित है, (अस्नाविरं) वह नाड़ियों के बन्धन से अलग है, जैसा वायु और रुधिर नाड़ियों में बंधा रहता है, ऐसा बन्धन परमेश्वर में नहीं होता, (शुद्धं) जो अविद्या अज्ञानादि क्लेश और सब दोषों से पृथक् है, (अपापविद्धम्) सो ईश्वर पापयुक्त वा पाप करने वाला कभी नहीं होता, क्योंकि वह स्वभाव से ही धर्मात्मा है, (कविः) जो सब का जानने वाला है, (मनीषी) जो सब का अन्तर्यामी है, और भूत, भविष्यत् तथा वर्तमान इन तीनों कालों के व्यवहारों को यथावत् जानता है, (परिभूः) जो सब के ऊपर विराजमान हो रहा है, (स्वयम्भूः) जो कभी उत्पन्न नहीं होता और उसका कारण भी कोई नहीं, किन्तु वही सब का कारण, अनादि और अनन्त है। इससे वही सब का माता पिता है, और अपने ही सत्य सामर्थ्य से सदा वर्त्तमान रहता है, इत्यादि लक्षणों से युक्त जो सच्चिदानन्दस्वरूप परमेश्वर है, (शाश्वतीभ्यः0) उसने सृष्टि की आदिमें अपनी प्रजा को, जो कि उसके सामर्थ्य में सदा से वर्तमान है, उसके सब सुखों के लिए (अर्थान्व्यदधात्) सत्य अर्थों का उपदेश किया है। इसी प्रकार जब जब परमेश्वर सृष्टि को रचता है, तब तब प्रजा के हित के लिए सृष्टि की आदि में सब विद्याओं से युक्त वेदों का भी उपदेश करता है,और जब जब सृष्टि का प्रलय होता है तब तब वेद उसके ज्ञान में सदा बने रहते हैं, इससे उनको सदैव नित्य मानना चाहिए।"

यहाँ तक महर्षि ने शास्त्रप्रमाण के द्वारा यह सिद्ध किया है कि वेद नित्य है। यहाँ से आगे स्वामीजी महाराज वेद की नित्यता में जो तथ्य प्रस्तुत कर रहे हैं वह है युक्ति। युक्ति अर्थात् तर्क। जैसे अभाव से भाव की उत्पत्ति कभी नहीं होता। बिना कारण के कोई भी कार्य नहीं होता। इस प्रकार के तर्क देते हुए महर्षि वेद की नित्यता सिद्ध करते हुए लिखते हैं –

"यथा शास्त्रप्रमाणेन वेदा नित्याः सन्तीति निश्चयोऽस्ति, तथा युक्त्यापि। तद्यथा–

'नासत आत्मलाभो, न सत आत्महानम्, योऽस्ति स भविष्यति' इति न्यायेन वेदानांनित्यत्वं स्वीकार्य्यम्। कुतः? यस्य मूलं नास्ति, नैव तस्य शाखादयः सम्भवितुमर्हन्ति,वन्ध्यापुत्रविवाहदर्शनवत्। पुत्रो भवेच्चेत्तदा वन्ध्यात्वं न सिद्धयेत्, स नास्ति चेत्पुनस्तस्यविवाहदर्शने कथं भवतः? एवमेवात्रापि विचारणीयम्। यदीश्वरे विद्याऽनन्ता न भवेत्कथमुपदिशेत् ? स नोपदिशेच्चेन्नैव कस्यापि मनुष्यस्य विद्यासम्बन्धे दर्शनं च स्याताम्,निर्मूलस्य प्ररोहाभावात्। नह्यस्मिन् जगति निर्मूलमुत्पन्नं किंचिद् दृश्यते।

यस्य सर्वेषां मनुष्याणां साक्षादनुभवोऽस्ति सोऽत्र प्रकाश्यते–यस्य प्रत्यक्षोऽनुभवस्तस्यैवसंस्कारो, यस्य संस्कारस्तस्यैव स्मरणं ज्ञानं, तेनैव प्रवृत्तिनिवृत्ती भवतो नान्यथेति। तद्यथा–येन संस्कृतभाषा पठ्यते तस्याऽस्या एव संस्कारो भवति, नाऽन्यस्याः। येन देशभाषाऽधीयते तस्या एव संस्कारो भवति, नातोऽन्यस्याः। एवं सृष्टयादावीश्वरोपदेशाऽध्यापनाभ्यांविना नैव कस्या विद्याया अनुभवः स्यात्, पुनः कथं संस्कारस्तेन विना कुतः स्मरणम्? न च स्मरणेन विना विद्याया लेशोऽपि कस्यचिद् भवितुमर्हति।

भाषार्थ–जैसे शास्त्रों के प्रमाणों से वेद नित्य हैं, वैसे ही युक्ति से भी उनका नित्यपन सिद्ध होता है, क्योंकि 'असत् से सत् का होना अर्थात् अभाव से भाव का होना कभी नहीं हो सकता, तथा सत् का अभाव भी नहीं हो सकता। जो सत्य है उसी से आगे प्रवृत्ति भी हो सकती है, और जो वस्तु ही नहीं है उससे दूसरी वस्तु किसी प्रकार से नहीं हो सकती।' इस न्याय से भी वेदों को नित्य ही मानना ठीक है। क्योंकि जिसका मूल नहीं होता है, उसकी डाली, पत्र, पुष्प और फल आदि भी कभी नहीं हो सकते। जैसे कोई कहे कि वन्ध्या के पुत्र का विवाह मैंने देखा, यह उसकी बात असम्भव है, क्योंकि जो उसके पुत्र होता तो वह वन्ध्या ही क्यों होती, और जब पुत्र ही नहीं है तो उसका विवाह और दर्शन कैसे हो सकते हैं? वैसे ही जब ईश्वर में अनन्तविद्या है, तभी मनुष्यों को विद्या का उपदेश भी किया है। और जो ईश्वर में अनन्तविद्या न होती तो वह उपदेश कैसे कर सकता, और वह जगत् को भी कैसे रच सकता ? जो मनुष्यों को ईश्वर अपनी विद्या का उपदेश न करता तो किसी मनुष्य को विद्या, जो यथार्थ ज्ञान है, सो कभी नहीं होता, क्योंकि इस जगत् में निर्मूल का होना वा बढ़ना सर्वथा असम्भव है। इससे यह जानना चाहिए कि परमेश्वर से वेदविद्या मूल को प्राप्त होके मनुष्यों में विद्यारूप वृक्ष विस्तृत हुआ है।

इस में और भी युक्ति है कि जिसका सब मनुष्यों को अनुभव और प्रत्यक्ष ज्ञान होता है, उसीका दृष्टान्त देते हैं–देखो कि जिसका साक्षात् अनुभव होता है उसी का ज्ञान में संस्कार होता है,संस्कार से स्मरण, स्मरण से इष्ट में प्रवृत्ति और अनिष्ट से निवृत्ति होती है, अन्यथा नहीं। जो संस्कृत भाषा को पढ़ता है उसके मन में उसी का संस्कार होता है, अन्य भाषा का नहीं, और जो किसी देशभाषा को पढ़ता है उस को देशभाषा का संस्कार होता है, अन्य का नहीं। इसी प्रकार जो वेदों का उपदेश ईश्वर न करता तो किसी मनुष्य को विद्या का संस्कार नहीं होता, जब विद्या का संस्कार न होता तो उसका स्मरण भी नहीं होता, स्मरण से विना किसी मनुष्य को विद्या का लेश भी न हो सकता। इस युक्ति से क्या जाना जाता है कि ईश्वर के उपदेश से वेदों को सुन पढ़के और विचार के ही मनुष्यों को विद्या का संस्कार आज–पर्यन्त होता चला आया है, अन्यथा कभी नहीं हो सकता।"

ऋषि मुनियों की शाश्वत प्राचीन प्रश्नोत्तर शैली के माध्यम से महर्षि इस विषय को समापन की ओर ले जा रहे हैं। पूर्वपक्ष की ओर से प्रश्न है कि व्यक्ति स्वाभाविक क्रिया, सुखदुःख के अनुभव से सीखता रहता है, इस प्रकार निरन्तर विद्या और ज्ञान की वृद्धि होने पर मनुष्य ही

वेदों की रचना कर सकते हैं तो फिर वेद ईश्वर ने बनाये हैं यह क्यों माना जा रहा है? इत्यादि प्रश्नोत्तर के माध्यम से विषयवस्तु को आगे बढ़ाया है।

"किं च भोः! मनुष्याणां स्वाभाविकी या प्रवृत्तिर्भवति, तत्र सुखदुःखानुभवश्च, तयोत्तरोत्तरकाले क्रमानुक्रमाद्विद्यावृद्धिर्भविष्यत्येव, पुनः किमर्थमीश्वराद्वेदोत्पत्तेः स्वीकार इति ?

एवं प्राप्ते ब्रूमः—एतद्वेदोत्पत्तिप्रकरणे परिहृतम्, तत्रैष निर्णयः—यथा नेदानीमन्येभ्यःपठनेन विना कश्चिद विद्वान् भवति, तस्य ज्ञानोन्नतिश्च, तथा नैवेश्वरोपदेशागमेन विना कस्यापि विद्याज्ञानोन्नतिर्भवेत्' अशिक्षित— बालकवनस्थवत्। यथोपदेशमन्तरा नबालकानां वनस्थानां च विद्यामनुष्यभाषाविज्ञानेऽपि भवतः, पुन विद्योत्पत्तेस्तु का कथा? तस्मादीश्वरादेव या वेदविद्याऽगता सा नित्यैवास्ति, तस्य सत्यगुणवत्त्वात्।

यन्नित्यं वस्तु वर्त्तते तस्य नामगुणकर्माण्यपि नित्यानि भवन्ति, तदाधारस्य नित्यत्वात्। नैवाधिष्ठानमन्तरा नामगुणकर्मादयो गुणाः स्थितिं लभन्ते, तेषां पराश्रितत्वात्। यन्नित्यंनास्ति न तस्यैतान्यपि नित्यानि भवन्ति। नित्यं चोत्पत्तिविनाशाभ्यामितरद्भवितुमर्हति। उत्पत्तिर्हि पृथग्भूतानां द्रव्याणां या संयोगविशेषाद् भवति । तेषामुत्पन्नानां कार्य्यद्रव्याणां सति वियोगे विनाशश्च संघाताभावात्। अदर्शनं च विनाशः। ईश्वरस्यैकरसत्वान्नैवतस्य संयोगवियोगाभ्यां संस्पर्शोऽपि भवति। अत्रा कणादमुनिकृतं सूत्रं प्रमाणमस्ति—

'सदकारणवन्नित्यम् ।।१।।वैशेषिके अ०४। सू०१।।

अस्यायमर्थः—यत्कार्य्यकारणादुत्पद्य विद्यमानं भवति, तदनित्यमुच्यते, तस्य प्रागुत्पत्तेरभावात्। यत्तु कस्यापि कार्य्यं नैव भवति किन्तु सदैव कारणरूपमेव तिष्ठति, तन्नित्यं कथ्यते।

यद्यत्संयोगजन्यं तत्तत्कर्त्रपेक्षं भवति। कर्त्तापि संयोगजन्यश्चेत् तर्हि तस्याप्यन्योऽन्यः कर्त्तास्तीत्यागच्छेत्। एवं पुनः पुनः प्रसंगादनवस्थापत्तिः। यच्च संयोगेन प्रादुर्भूतं, नैव तस्यप्रकृतिपरमाण्वादीनां संयोगकरणे सामर्थ्यं भवितुमर्हति, तस्मात्तेषां सूक्ष्मत्वात्। यद्यस्मात्सूक्ष्मं तत्तस्यात्मा भवति, स्थूले सूक्ष्मस्य प्रवेशार्हत्वात्, अयोऽग्निवत्। यथा सूक्ष्मत्वादग्निः कठिनंस्थूलमयः प्रविश्य तस्यावयवानां पृथग्भावं करोति, तथा जलमपि पृथिव्याः सूक्ष्मत्वात्तत्कणान् प्रविश्य संयुक्तमेकंपिण्डं करोति, छिनत्ति च। तथा परमेश्वरः संयोगवियोगाभ्यां पृथग्भूतोविभुरस्त्यतो नियमेन रचनं विनाशं च कर्त्तुमर्हति, न चान्यथा। यथा संयोगवियोगान्तर्गतत्वान्नास्मदादीनां प्रकृतिपरमाण्वादीनां संयोगवियोगकरणे सामर्थ्यमस्ति। तथेश्वरेऽपि भवेत्।

अन्यच्च—यतः संयोगवियोगारम्भो भवति स तस्मात् पृथग्भूतोऽस्ति, तस्य संयोगवियोगारम्भस्यादिकारणत्वात्। आदिकारणस्याभावात्संयोगवियोगारम्भस्यानु—

त्पत्तेश्च। एवंभूतस्य सदा निर्विकारस्वरूपस्याजस्यानादेर्नित्यस्य सत्यसामर्थ्यस्येश्वरस्य सकाशाद्वेदानांप्रादुर्भावात्तस्य ज्ञाने सदैव वर्त्तमानत्वात्सत्यार्थवत्त्वं नित्यत्वं चैतेषामस्तीति सिद्धम् ।

— : इति वेदानां नित्यत्वविचारः : —

भाषार्थ—प्रश्न—मनुष्यों की स्वभाव से जो चेष्टा है, उसमें सुख और दुःख का अनुभव भी होता है। उससे उत्तर उत्तर काल में कमानुसार से विद्या की वृद्धि भी अवश्य होगी। तब वेदों को भी मनुष्य लोग रच लेंगे, फिर ईश्वर ने वेद रचे, ऐसा क्यों मानना ?

उत्तर—इसका समाधान वेदोत्पत्ति के प्रकरण में कर दिया है। वहां यही निर्णय किया है कि जैसे इस समय में अन्य विद्वानों से पढ़े विना कोई भी विद्यावान् नहीं होता और इसी के विना किसी पुरुष में ज्ञान की वृद्धि भी देखने में नहीं आती, वैसे ही सृष्टि के आरम्भ में ईश्वरोपदेश की प्राप्तिके विना किसी मनुष्य की विद्या और ज्ञान की बढ़ती कभी नहीं हो सकती। इसमें अशिक्षित बालक और वनवासियों का दृष्टान्त दिया था, कि जैसे उस बालक और वन में रहने वाले मनुष्य को यथावत् विद्या का ज्ञान नहीं होता, तथा अच्छी प्रकार उपदेश के विना उनको लोक—व्यवहार का भी ज्ञान नहीं होता, फिर विद्या की प्राप्ति तो अत्यन्त कठिन है। इससे क्या जानना चाहिए कि परमेश्वर के उपदेश वेदविद्या आने के पश्चात् ही मनुष्यों को विद्या और ज्ञान की उन्नति करनी भी सहज हुई है, क्योंकि उसके सभी गुण सत्य हैं। इससे उसकी विद्या जो वेद है वह भी नित्यही है ।

जो नित्य वस्तु है उसके नाम, गुण और कर्म भी नित्य ही होते हैं, क्योंकि उनका आधार नित्य है । और विना आधार से नाम गुण और कर्मादि स्थिर नहीं हो सकते, क्योंकि वे द्रव्यों के आश्रय सदा रहते हैं। जो अनित्य वस्तु है, उसके नाम गुण और कर्म भी अनित्य होते हैं। सो नित्य किसको कहना?जो उत्पत्ति और विनाश से पृथक् है। तथा उत्पत्ति क्या कहाती है कि जो अनेक द्रव्यों के संयोग विशेष से स्थूल पदार्थ का उत्पन्न होना। और जब वे पृथक् पृथक् होके उन द्रव्यों के वियोग से जो कारण में उनकी परमाणुरूप अवस्था होती है, उसको विनाश कहते हैं। और जो द्रव्य संयोग से स्थूल होते हैं वे चक्षु आदि इन्द्रियों से देखने में आते हैं। फिर उन स्थूल द्रव्यों के परमाणुओं का जब वियोग हो जाता है, तब सूक्ष्म के होने से वे द्रव्य देख नहीं पड़ते, इसका नाम नाश है। क्योंकि अदर्शन को ही 'नाश' कहते हैं । जो द्रव्य संयोग और वियोग से उत्पन्न और नष्ट होता है, उसी को कार्य्य और अनित्य कहते हैं, और जो संयोग वियोग से अलग है उसकी न कभी उत्पत्ति और न कभी नाश होता है। इस प्रकार का पदार्थ एक परमेश्वर और दूसरा जगत् का कारण है, क्योंकि वह सदा अखण्ड एकरस ही बना रहता है। इसी से उसको 'नित्य' कहते हैं।

इसमें कणादमुनि के सूत्र का भी प्रमाण है—

(सदकारन्) जो किसी का कार्य है कि कारण से उत्पन्न होके विद्यमान होता है उसको अनित्य कहते हैं। जैसे मिट्टी से घड़ा होके वह नष्ट भी हो जाता है। इसी प्रकार परमेश्वर के सामर्थ्य कारण से सब जगत् उत्पन्न हो के विद्यमान होता है, फिर प्रलय में स्थूलाकार नहीं रहता किन्तु वह कारणरूप तो सदा ही बना रहता है। इससे क्या आया कि जो विद्यमान हो और जिसका कारण कोई भी न हो अर्थात् स्वयं कारणरूप ही हो, उसको 'नित्य' कहते हैं ।

क्योंकि जो जो संयोग से उत्पन्न होता है सो सो बनाने वाले की अपेक्षा अवश्य रखता है। जैसे कर्म, नियम और कार्य ये सब कर्त्ता, नियन्ता और कारण को ही सदा जनाते हैं और जो कोई ऐसा कहे कि कर्त्ता को भी किसी ने बनाया होगा तो उससे पूछना चाहिए उस कर्त्ता के कर्त्ता को किसने बनाया है ? इसी प्रकार यह अनवस्था प्रसंग अर्थात् मर्यादा रहित होता है। जिस की मर्यादा नहीं है, वह व्यवस्था के योग्य नहीं ठहर सकता। और जो संयोग से उत्पन्न होता है, वह प्रकृति और परमाणु आदि के संयोग करने में समर्थ ही नहीं हो सकता। इससे क्या आया कि जो जिससे सूक्ष्म होता है वही उसका आत्मा होता है, अर्थात् स्थूल में सूक्ष्म व्यापक होता है। जैसे लोहे में अग्नि प्रविष्ट होके उसके सब अवयवों में व्याप्त होता है, और जैसे जल पृथिवी में प्रविष्ट होके उसके कणों के संयोग से पिण्ड करने में हेतु होता है तथा उसका छेदन भी करता है, वैसे ही परमेश्वर सब संयोग और वियोग से पृथक्, सब में व्यापक, प्रकृति और परमाणु आदि से भी अत्यन्त सूक्ष्म और चेतन है, इसी कारण से प्रकृति और परमाणु आदि द्रव्यों के संयोग करके जगत् को रच सकता है। जो ईश्वर उनसे स्थूल होता तो उनका ग्रहण और रचन कभी नहीं कर सकता, क्योंकि जो स्थूल पदार्थ होते हैं वे सूक्ष्म पदार्थों के नियम करने में समर्थ नहीं होते। जैसे हम लोग प्रकृति और परमाणुआदि के संयोग और वियोग करने में समर्थ नहीं हैं, क्योंकि जो संयोग वियोग के भीतर है, वह उसके संयोग वियोग करने में समर्थ नहीं हो सकता ।

तथा जिस वस्तु से संयोग वियोग का आरम्भ होता है वह वस्तु संयोग और वियोग से अलगही होता है, क्योंकि वह संयोग और वियोग के आरम्भ के नियमों का कर्त्ता और आदिकारण होताहै, तथा आदिकारण के अभाव से संयोग और वियोग का होना ही असम्भव है। इससे क्या जानना चाहिए कि जो सदा निर्विकार स्वरूप, अंज, अनादि, नित्य, सत्यसामर्थ्य से युक्त और अनन्त विद्या वाला ईश्वर है, उसकी विद्या से वेदों के प्रकट होने और उसके ज्ञान में वेदों के सदैव वर्त्तमान रहने सेवेदों को सत्यार्थयुक्त और नित्य सब मनुष्यों को मानना योग्य है। यह संक्षेप से वेदों के नित्य होने का विचार किया।

इति वेदानां नित्यत्वविचारः"

इस प्रकार वेदनित्यत्व विषय पर विचार पूर्ण करके इस ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के स्वाध्याय में आगे हम वेदविषय विचार का स्वाध्याय करेंगे। प्रभु की कृपा तथा आप सबके सहयोग से यह स्वाध्यायक्रम निरन्तर बना रहे, बस यही इच्छा निरन्तर रहती है। अस्तु!

ऋषिगाथा

पथ पर

(गुरुदक्षिणा में विश्वहिताय सर्वस्व अर्पण कर कर्मक्षेत्र के अतिरथी देव दयानंद के अनूपशहर में क्षमादान, चासी, जलेसर, फर्रुखाबाद में पाखंड खंडन और पाठशाला के निरीक्षण की घटनाएँ आपने गतांक में पढ़ी इस अंक में पढ़िए महर्षि के मुगलसराय प्रवास में ईसाइयों से संवाद, डुमराऊँ में पं. दुर्गादत्त से शास्त्रार्थ के पश्चात् आरों होकर पटना प्रवास में सदुपदेश और पटना से जलयान से जमालपुर पहुँचकर जंक्शन पर पाश्चात्य सभ्यता प्रशंसक युगल को दिए जवाब के बारे में.......गतांक से आगे)

था चैत्र, ईश-ग्रह-लोक-निद्धि, यह ग्रीष्म चंड रिपु सा मचला ।
जग बाधाओं को प्रबल वेग, बन आज स्वामिवर चीर चला ।।
आये ऋषि "मुगलसराय" रुके, श्री वृन्दावन के शुभ घर पर ।
पावन वाणी पहिचान झुके, श्रुति पथ पर भक्तों के अन्तर ।
प्रभु के प्रभाव को जान पादरी, लाल बिहारी दे आयें ।
दर्शन सरिता में नहाये शंका, सागर के तट पर आये ।।
प्रभु ईसा तथा यीशु मत पर, "**स्वामी-दे**" वाद विवाद हुआ ।
भोजन, भक्षण, आराधन, ध्यान, पर कुछ क्षण संवांद हुआ ।।
तज ऋषि ने मुगलसराय किया, डुमराऊं जनपद ओर गमन ।
पथ पर बढ़ते जाना चलते, जाना ही वीरों का जीवन ।।९।।
डुमराऊं में नागा नानक पंथी, मठ पर ऋषि राज गये ।
प्रभु भक्त जवाहरदास मिले, चरणों में मन में मोद लिये ।।
श्री जय प्रकाश दीवान राज के, राजकीय गृह में लाये ।
ऋषि विद्वता गुरुता लखकर, महाराज महेश्वर हर्षाये ।।
राधाप्रसाद सिंह राज कुँवर, बाबू श्री जय प्रकाश आकर ।
मुन्शी रणधीर आदि सज्जन, हर्षाते ऋषि दर्शन पाकर ।।
सबके अन्तर तम को हर कर, ऋषिवर प्रकाश युत करते थे ।
भूलों को सत्य मूल बतला, कर अमृत बल भर देते थे ।।
सोते, जगते, चलते, फिरते, करते रहते ईश्वर चिन्तन ।

पथ पर बढ़ते जाना चलते, जाना ही वीरों का जीवन ।।१०।।

जग बतलाया करता अंधों में, पंच एक अक्षी रहता ।
पादप विहीन भू: खंडों में, एरण्ड विजय गाथा कहता ।।

अवसर पर रङ्ग कर तन श्रगाल, वन राज कहाया करते है ।
ऐसे ही कुछ विज्ञान जान, पंडित इठलाया करते हैं ।।

विद्याभिमान में ओत प्रोत, पंडित श्री दुर्गादत्त यहाँ ।
गोविन्द विप्र वंशीधर को, ले गये स्वामिवर रहे जहाँ ।।

अद्वैत, द्वैत, प्रतिमा पूजन, खंडन, मंडन संवाद हुआ ।
पंडित दल का अन्तर भर कर, स्वामी से वाद-विवाद हुआ ।।

हो गया गर्व गिरि चूर्ण स्वामि, करते बर्बरता का मर्दन ।
पथ पर बढ़ते जाना चलते, जाना ही वीरों का जीवन ।।११।।

अत्यन्त अहंभावी पण्डित, श्री दुर्गादत्त विवश होकर ।
बोले-यह साधक क्या जाने, मैं हूं पंडित मणि विद्वत्वर ।।

मैं परम हंस हूँ, योगिवर्य, आचार्य विप्र राजेन्द्र, तथा ।
मनमानी उपाधियाँ कितनी, कहती थी इनकी ज्ञान कथा ।।

''खट्टे होते अंगूर'' श्रगाली भी, थक प्राय: कह जाती ।
है सत्य योगिवर के सम्मुख, किस नर की विद्वता जाती ।।

डुमराऊँ तज आरा आये, ऋषिवर श्री स्वामी दयानन्द ।
कर्शन सुत, दण्डी शिष्य, ब्रह्मचारी, योगी, आनन्द कन्द ।।

तजकर आरा, पटना जनपद की, ओर चले ऋषिराज चरण ।
पथ पर बढ़ते जाना चलते, जाना हीं वीरों का जीवम ।।१२।।

पटना में स्वामी दयानन्द, महाराज विपिन में आ ठहरे ।
सुन्दर किसलय कोमल कलियाँ, थी पुष्प अनेकों हरे भरे ।।

फल भार लिये पतली शाखायें, भू: को भाल नवाती थी ।
अंचल में सुत ले नव वनिता सी, मुस्काती इठलाती थी ।।

पीले तन पत्र अनेकों कहते:-दो दिन तक इठलाना है ।

सौरभ में बहने वालों तुमको, भी हमसा बन जाता है ।।

पर एक ओर पागल द्विरेफ, कहता:-मेरा मधुमय जीवन ।

जिस जीवन में मधु प्यास नहीं, उसका जीवन नीरस जीवन ।।

विहगावलियाँ आये ऋषि का, मन से करती स्वागत गायन ।

पथ पर बढ़ते जाना चलते, जाना ही वीरों का जीवन ।।१३।।

पटना में कितने पंडित मंडल, ऋषि दर्शन हित आते थे ।

आते, केवल नीरस तर्कों की, भेंट अनेकों लाते थे ।।

पटना विद्यालय के पण्डित, श्रीराम बाल ऋषि दर्शन कर ।

आकर प्रभाव में फेंक दिया, ''ठाकुर जी''को प्रस्तर कहकर ।।

स्वामी चरणों में राजनाथ, विद्या अर्थी आया चलकर ।

था सायंकाल मार्ग कंटकमय, कांप रही काया थर-थर ।।

बोले ऋषिवर पथ पर तूने, देखा होगा कोई विषधर ।

अज्ञात बात कैसे जानी, श्रद्धा से भर आया अन्तर ।।

ऋषिवर चरणों पर लेट गया, नयनों में लहराता सावन ।

पथ पर बढ़ते जाना-चलते, जाना ही वीरों का जीवन ।।१४।।

ऋषि तज कर पटना, वाष्पयान, से पहुँचे जमालपुर जंकशन ।

कौपीन मात्र परिधान, स्वामि के, तन में हँसता या यौवन ।।

पाश्चात्य सभ्यता का परि, पोषक दम्पति युगल विचरता था ।

इठलाता था, मुस्कराता था, अहमत्व भाव ले रमता था ।।

बोली पत्नी-यह साधु यहाँ, बस एक लंगोटी धारण कर।

क्यों घूम रहा इठलाता सा, भिखमंगा उर में साहस भर ।।

स्वामी से आकर कहा किसी ने, उत्तर में बोले ऋषिवर ।

हम संन्यासी प्राचीन सभ्यता, के पोषक, हैं किसका डर ।।

बाबा आदम, बीबी हब्बा, भी विचरे थे उद्यान अदन ।

पथ पर बढ़ते जाना चलते, जाना ही वीरों का जीवन ।।१५।।

पंचम खण्ड , अध्याय : चार

अहमदिया सम्प्रदाय और आर्यपथिक लेखरामजी

प्रारम्भ में ही इस्लाम की यह विशेषता रही है कि उसके अन्तरिक्ष में समय-समय पर अन्धड़ उठते रहे हैं । कोई एक व्यक्ति ऐसा उत्पन्न हो जाता है जो मजहब के नाम पर कुछ लोगों को इकट्ठा करके कुछ समय के लिए समाज के वातावरण में हलचल पैदा कर देता है । ऐसे एक अन्धड़ की चर्चा इससे पूर्व कर आये हैं । उन्नीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण में राय बरेली के सैयद अहमद ब्रेलवी नाम के मौलवी ने सिक्खों के विरूद्ध जिहाद की घोषणा करके एक देशव्यापी उत्पात मचा दिया था । उसके धर्मान्धानुयायी वहाबी संप्रदाय के नाम से प्रसिद्ध हुए । प्रारम्भ में राजनैतिक स्वार्थ के कारण अंग्रेजी सरकार ने सिक्ख राज्य को हानि पहुंचाने के लिए उसे काफी बढ़ावा दिया, परन्तु सिक्खों का नाश हो जाने पर जब वहाबी लोग अंग्रेजी सरकार पर ही टूट पड़े तब सरकार ने उनका दमन कर दिया ।

जिस राजनीतिक स्वार्थ से प्रेरित अंग्रेजी सरकार ने प्रारम्भ में वहाबियों को बढ़ावा दिया था, उसकी प्रेरणा से अलीगढ़ के आन्दोलन का जन्म हुआ और अब हम जिस नए सम्प्रदाय की चर्चा करने लगे हैं, उसके विकास की तह में भी अंग्रेजी सरकार की वही नीति विद्यमान थी । जो व्यक्ति या जो सम्प्रदाय भारत की एकता तथा बढ़ती हुई राष्ट्रीयता में विघ्नकारी हो सकता था, सरकार उसकी पीठ पर हाथ रख देती थी, अन्य प्रकार से चाहे वह कैसा ही बुरा हो । उस युग में पंजाब के गुरदासपुर जिले के कादियां गांव में अहमदिया नाम के जिस सम्प्रदाय ने जन्म लिया वह इसी कोटि का था ।

अहमदिया सम्प्रदाय का संस्थापक गुलाम अहमद कादियानी नया पैगम्बर बन कर मैदान में आया । उसने यह दावा किया-"मुझे खुदा की ओर से इलहाम होता है ।" और यह भी दावा किया-"मैं मोजजे (चमत्कार) कर सकता हूं ।" आश्चर्य यह है कि एक ईश्वर और एक नबी को मानने वाले इस्लाम में सैकड़ों ऐसे लोग निकल आयें जिन्होंने गुलाम अहमद के इस दावे को ठीक मान लिया और वे उसके शिष्य बन गए । बहुत-से मुसलमान मौलवियों की ओर से उसके दावे का विरोध किया गया, परन्तु सम्प्रदाय का दायरा बढ़ता गया, यहाँ तक कि पंजाब के बहुत-से नगरों में उसके केन्द्र स्थापित हो गए ।

गुलाम अहमद बड़ा चतुर व्यक्ति था । पहलेसे ही उसने ऐसी नीति को अपनाया जिससे सरकार उससे प्रसन्न रही । वह सरकार बर्तानिया का बड़ा प्रशंसक और समर्थक बन गया । उसकी इस नीति का यह परिणाम हुआ कि प्रारम्भ से ही अंग्रेज अफसर उस पर रक्षा का हाथ रखने लगे और अहमदिया लोगों को अपने राज्य का दृढ़ स्तम्भ मानने लगे ।

जिन दावों के बल पर अहमदिया सम्प्रदाय खड़ा हुआ था, आर्यसमाज उनका कट्टर विरोधी था। इस कारण यह स्वभाविक ही था कि दोनों की परस्पर टक्कर होती । पंजाब के जिस इलाके में कादियानी

सम्प्रदाय का गढ़ था वह आर्यसमाज का भी प्रचार क्षेत्र था । जब आर्यसमाज की ओर से मिरजा गुलाम अहमद के दावों का खंडन होने लगा तब वह बहुत रूष्ट हो गया और अपने लेखों में न केवल आर्यसमाजियों की निन्दा करने लगा अपितु मुबाहिसे की जगह ''मुबाहिला'' करने लगा । इस्लाम की भाषा में मुबाहिले का अर्थ है शाप देना ।

यह परिस्थिति थी जब धार्मिक वादविवाद के क्षेत्र में एक वीर-पुरुष ने प्रवेश किया । वह था आर्य-मुसाफिर पंडित लेखराम । लेखराम का जन्म १८५८ ई. मे झेलम जिले के सैयदपुर नाम के गांव में हुआ था । जिस कुल में उन्होंने जन्म लिया वह शांडिल्य गोत्रज सारस्वत ब्राह्मण कहलाता था । छोटी उमर में उस समय की पद्धति के अनुसार लेखराम को फ़ारसी की शिक्षा दी गई । बालक लेखराम का पालन-पोषण उसके चाचा पडित गडाराम जी की देख रेख में हुआ । छोटी उमर से ही बालक का स्वभाव जहाँ एक ओर बहुत तीव्र और उग्र था वहाँ साथ ही बुद्धि ऐसी कुशाग्र थी कि गुरू लोग स्वभाव से परेशान होकर भी बुद्धि पर अत्यन्त प्रसन्न रहते थे और शिष्य से प्रेम करते थे ।

लेखराम जी के चाचा गंडाराम जी पुलिस में नौकर थे । सत्रह वर्ष की आयु में लेखरामजी भी पुलिस में भर्ती हो गये । इनके चाचा के साथी सिपाहियों में एक सिक्ख सिपाही की प्रवृत्ति बहुत धार्मिक थी । उसके संग से लेखराम जी झुकाव भी ईश्वर-भक्ति की ओर हुआ, जिसका परिणाम यह हुआ कि २२वर्ष की आयु में आप आर्यसमाज के सदस्य बन गये और पेशावर में आर्यसमाज की स्थापना कर दी । यों तो आप आर्यसमाजी हो गये, परन्तु अभी नवीन वेदान्त के सिद्धान्तों में थोड़ी बहुत श्रद्धा विद्यमान थी । अपनी शंकाओं के समाधान करने का आपको सबसे उत्तम उपाय यही प्रतीत हुआ कि महर्षि दयानन्द की सेवा में उपस्थित होकर ज्ञान लाभ किया जाये । अजमेर जाकर आप स्वामी जी मिले । वहाँ से आप दृढ़ आर्यसमाजी बनकर लौटे और पुलिस की नौकरी में रहते हुए ही धर्म का प्रचार आरम्भ कर दिया । लेखराम जी की वैराग्यवृत्ति का अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि जब उनकी माता ने उन्हें विवाह के बन्धन में बांधने की योजना बनाई तो पं. लेखराम जी ने साफ इन्कार कर दिया, क्योंकि महर्षि ने उनसे प्रतिज्ञा ले ली थी कि वह पच्चीस वर्ष की आयु से पहले विवाह न करेंगे ।

पेशावर में पुलिस की नौकरी करते हुए ही पंडित जी वाणी और लेख द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार करने लगे थे । आपकी प्रेरणा से पेशावर आर्यसमाज की ओर से ''धर्मोपदेश'' नाम का एक मासिक पत्र निकाला गया जिसमें आप प्राय: लिखते रहते थे । उन दिनों सरहद में मिरजा गुलाब अहमद कादियानी के शिष्यों का जोश बढ़ रहा था । पंडित जी मोहम्मदिया मौलवियों से जोरदार मुबाहसे करते थे । जब इस बात की रिपोर्ट पुलिस अफसरों को पहुँची तो उन्होंने एक मुसलमान अफसर को तहकीकात के लिए भेजा । पंडित जी ने उसके प्रश्नों का निर्भयता से ऐसा तुर्की-बेतुर्की जवाब दिया कि उसने नाराज होकर आप पर अफसर का अपमान करने का आरोप लगा दिया, जिसके कारण आपका सारजैण्ट पद छूट गया । इन्हीं दिनों पंडित जी ने मिरजा गुलाम अहमद की बनाई हुई ''बुराहीन अहमदिया'' नाम की पुस्तक का

''तकजीब बुराहीन अहमदिया'' नाम की पुस्तक से उत्तर लिखना आरम्भ किया । सरहद की पुलिस में मुसलमान अफसरों की बहुतायत थी । वे लोग लेखराम जी के जोशीले प्रचार से अत्यन्त रुष्ट हो गये और उनकी उन्नति में बाधा डालने लगे । फलतः १८८४ ई. के सितम्बर में आपने पुलिस की नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और दासता के बन्धन से मुक्त होकर वैदिक धर्म के प्रचार में तन्मय हो गये ।

यों तो पुलिस की नौकरी में रहते हुए पंडित जी ने अहमदियों के भ्रमजाल का खंडन आरम्भ कर दिया था, नौकरी से मुक्त होकर तो वे अपने पूरे आत्मबल को लेकर प्रचार-युद्ध के मैदान में उतर आये । आपको परमात्मा ने शारीरिक विभूति खूब दी थी । शरीर गठीला, मस्तक विशाल और आंखें निर्भय थीं । साधारण दशा में चेहरे पर मुस्कराहट रहती थी परन्तु जब जोश में आते.थे, तब आंखों से तेज बरसने लगता था । स्वर बहुत ऊँचा सिंह के समान था । वेश-भूषा में पूरे पेशावरी युवक दिखई देते थे । लम्बे शमले वाली पगड़ी, बन्द गले का कोट और पंजाबी पजामा यह उनका वेश था। यह एक मजे कि बात थी कि उन्हें धोती से बहुत चिढ़ थी । अपने परम मित्र और सुख-दुःख के साथी लाला मुन्शीराम जी (महात्मा मुन्शीराम जी) से, जो उन दिनों जालन्धर में वकालात करते थे, आप प्रायः कहा करते थे-''ईश्वर जानता है, आपको धोती पहने हुए देख मुझे बड़ा दुःख होता है ।'' आपको धोती पहने कभी किसी ने नहीं देखा । उसे आप सुस्ती का चिन्ह समझते थे और सुस्ती से आप कोसों दूर रहते थे।

नौकरी छोड़कर अपनी योग्यता बढ़ाने के लिए पं. लेखाराम जी लाहौर आ गए और स्वाध्याय में लग गये। वहाँ आपने गुलाम अहमद का एक विज्ञापन देखा जिसमें उसने अपने को खुदा का पैगम्बर घोषित किया था और साथ ही अन्य धर्म वालों को यह चुनौती दी थी कि वे उसके चमत्कारों को झूठा सिद्ध करके दिखाएँ । यदि कोई गैर-मुस्लिम कादियाँ में एक वर्ष रह कर चमत्कार का कायल न हो जाता तो मिरजा ने उन्हें चौबीस सौ रूपये जुर्माने के तौर पर देने की घोषणा की थी । विज्ञापन पढ़ते ही पंडित जी ने उसे पत्र लिखा जिसमें सूचना दी कि मैं तुम्हारे पास एक साल तक रह कर मोजजे का इम्तहान लेने को तैयार हूँ। मिरजा तक पंडित लेखराम जी की तर्कशक्ति और निर्भयता की ख्याति पहुँच चुकी थी । वह उन्हें टालने के लिए पत्र लिखता रहा, परन्तु पंडित जी इस दम-झांसे में आने वाले कहाँ थे । वे स्वयं कादियां पहुँच गये और मिरजा के घर पर जाकर उसे ललकारा । जब इस पर भी चमत्कार दिखाने को तैयार न हुआ तो आपने कई दिनों तक कादियां में वैदिक धर्म पर प्रभावशाली व्याख्यान दिये। उसका परिणाम यह हुआ कि एक जबरदस्त आर्यसमाज की स्थापना हो गई ।

१८८६ ई. में पंडित जी ने ''नुसखा खब्त अहमदियान'' नाम की एक और पुस्तक लिखी । यह पुस्तक गुलाम मोहम्मद की ''सुरमा चशम आर्या'' के जवाब में लिखी गई थी । इस प्रकार वह लेखों और व्याख्यानों द्वारा अहमदिया सम्प्रदाय के मायाजाल को काटने के साथ-साथ इस्लाम के अन्य प्रचारकों के आर्यसमाज पर किये गये आक्षेपों के उत्तर भी देते रहते थे । अब धीरे-धीरे उनका प्रचार का क्षेत्र बढ़ रहा था। वे विधर्मियों के आक्रमणों के उत्तर भी देते थे और वैदिक सिद्धान्तों के मण्डन में पुस्तकें भी लिखते थे।

१८८७ ई. के आरम्भ में फिरोजपुर से निकलने वाले साप्ताहिक "आर्य गजट" के सम्पादक बने और अन्य कई पुस्तकें भी लिखीं । यह जानकर शायद आज के पाठकों को आश्चर्य होगा कि इस प्रकार दिन-रात धर्म की सेवा करने वाला उपदेशक उस समय आर्य प्रतिनिधि सभा से केवल २५ रूपया मासिक निर्वाह लेता था। यह राशि दो वर्ष पश्चात् विवाह कर लेने पर बढ़ कर ३५ रुपये तक पहुँच गई थी । यह था त्यागभाव जिसने उस युग में आर्यसमाज के प्रभाव को इतना विस्तृत और प्रबल कर दिया था ।

१८८८ ई. में आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिवेशन में निश्चय हुआ कि महर्षि के जीवन-वृत्तान्त के संग्रह का कार्य किसी योग्य व्यक्ति के सुपुर्द किया जाये । सबकी दृष्टि पं. लेखराम जी पर पड़ी । उन्हें यह काम सौंपा गया कि वे देशभर में घूम कर महर्षि के जीवन से सम्बन्ध रखने वाली घटनाओं की छान-बीन करें और जहाँ-जहाँ महर्षि गये हैं, वहाँ पहुँच कर लोगों से मिलें और यदि कुछ लिखित सामग्री मिले उसे भी इकट्ठा करें । पं. लेखराम जी ने यह काम सहर्ष स्वीकार कर लिया और कमर कस कर देश भर मे भ्रमण करने के लिऐ तैयार हो गये। आपके नाम के साथ 'आर्य मुसाफिर' या 'आर्यपथिक' का विशेषण तब से ही जोड़ा गया।

दो वर्ष तक अनथक परिश्रम करके 'आर्यपथिक' ने महर्षि के जीवन से सम्बन्ध रखने वाली जो जानकारी इकट्ठी की वह महर्षि के आज तक लिखे गये सभी चरितों की आधारशिला है। अन्य लेखकों ने भाषा या क्रम में परिवर्तन किया हो या सम्भव है कि कोई धटना भी नई जोड़ जोड़ दी हो परन्तु जीवन चरित्र की रुपरेखा आज भी वही है ज़ो पथिक ने बना दी थी। यह उनके उग्र परिश्रम और सत्यनिष्ठा का ज्वलन्त प्रमाण है।

अपाहिज व बेसहारा गौधन की रक्षार्थ जोधपुर की

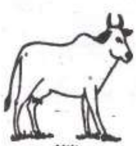

प्राचीनतम महर्षि दयानन्द गौशाला,मण्डोर

—आर्यसमाज जोधपुर रातानाड़ा के अन्तर्गत

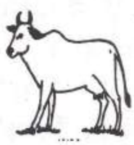

यह गौशाला जोधपुर की 109 वर्ष पुरानी गौशाला है इसमें गायों की देखभाल उचित ढंग से की जाती है आप भी अपना समय एवं दान देकर पुण्य के भागीदार बन सकते हैं । अत: आप द्वारा दिया गया दान 80जी के तहत छूट प्राप्त है । आप एवं अपने सहयोगियों से गौशाला में दान देकर 80जी की छूट प्राप्त कर लाभ प्राप्त कर पुण्य के भागीदार बन सकते हैं ।

पूर्णाहुति एवं कोरोना योद्धा सम्मान के साथ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

मगरा पून्जला; जोधपुर स्थित आर्यसमाज़ महर्षि पाणिनिनगंर में वृहदवृष्टि की पूर्णाहुति व कोरोना योद्धाओं के सम्मान के साथ समाज का२१वॉ वार्षिकोत्सव २0 जुलाई २0२0 को सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा श्री शिवरामशास्त्री व सेवाराम आर्य ने अर्थववेद के मंत्रों से आहुतियाँ कराई। परमात्मा से अच्छी वर्षा की मंगलकामना के साथकोविड–१६ की बीमारी से मुक्त होने की प्रार्थना की गई। वैश्विककोविड–१६ महामारी से देशव्यापी लॉकडाउन में मण्डोर क्षेत्र के जिन सरकारी विभाग, सामाजिक संस्थाओं व भामाशाहों ने सेवाकार्य किया उनको 'कोरोना योद्धा रत्नसम्मान' से सम्मानित कियागया।

मुख्य अतिथि श्रीमान सिंह कच्छवाहा सहायक प्रबन्धक, भारतीय स्टेटबैंक; विशिष्ठ अतिथि श्रीकुलदीप चौहान चीफ मैनेजर बैक ऑफ बडौदा के द्वारा श्री अभिषेक परिहार अधिशाषी अभियन्ता, जे.डी.ए.; चन्द्रप्रकाश देवड़ा सहायक अभियन्ता, नगर निगम; कैलाश गहलोत शाखा प्रबन्धक; मुकेश राज शाखा प्रबन्धक पोकरण,दिलीप कुमार वरिष्ठ शाखा प्रबन्धक,संदीपगहलोत शाखा प्रबन्धक मगरा बैंक, रतनलाल घारु जमादार, मुकेश जावा नगर निगम वार्ड ६२,गजेन्द्र सिंह जे.ई.एन, मगरा विद्युत विभाग; डॉ.आर्य त्रिलोकसाँखला,डॉ.मनोजसाँखला,डॉ. रामसिंहसोलंकी,वार्ड७१ से ७३, के बी.एल.ओ.बलवीरसिंह; लक्ष्मण सिंह पुलिस विभाग,पूँजला डाक घर एवं भामाशाहों में मनोहर सिंह साँखला अध्यक्ष श्रीनारायण सेवासमिति, सुभाषगहलोत अध्यक्ष माधव उद्यान, वीरेन्द्रजांगिड़, रमेशभडारी, बलवीरभाटी, अशोकगुजर,नरेन्द्रगुजर, प्रेस व इ.मीडियॉ वालो के साथ २५0 व्यक्तियों को'कोरोना योद्धा सम्मान' से सम्मानित किया गया।

अंत में प्रधान कैलाशचन्द्र आर्य ने सभी गणमान्य अतिथिओं का हार्दिक धन्यवाद व आभार प्रकट किया।

इस अवसर पर हेम सिंह आर्य, नरेन्द्र आर्य, सोहनसिंह, रमेशचन्द्र, करणसिंह, गौरव सोनी ,पदमसिंह, लक्ष्मणसिंह, श्यामआर्य, सच्चिदान्द भाटी, हुकमसिंह साँखला, नरपतसिंह गहलोत, ज्ञानसिंह गहलोत, मनोहर सिंह, हंसराज, रविश, भगवान, पंकज जांगिड़, सन्तुसिंह मेड़तीया ,देवीलाल राजेन्द्र वैष्णव,श्रीमतीललीतासांखला,संतोष आर्या,सरोजभाटी, पुष्पलता तोलम्बिया, दमयन्ति गहलोत, सुशीलादेवी गहलोत, अदिति आर्या उपस्थित थे। दो दिवसीय सम्मान समारोह में राज्य सरकार के कोरोना संबंधी मार्गदर्शन की पूर्ण अनुपालना की गई।

वैदिक मिशनरी पं0 कमलेशकुमारजी अग्निहोत्री का निधन

वैदिक धर्म के धुरंधरप्रचारक आदरणीय श्री कमलेशकुमारजी अग्निहोत्री का दुःखद निधन श्रावण शुक्लपक्ष पंचमी संवत् २०७७ शनिवार दिनांक 25 जुलाई २०२० को उनके किशनगढ़ स्थित आवास पर हो गया। स्मृतिभवन के सभी न्यासियों को यह समाचार सुनकर बहुत ही दुःख हुआ। श्रीमान् कमलेशकुमारजी ने महर्षि दयानन्द स्मृति भवन में रहते हुए जोधपुर प्रवास में भी अपने ओजस्वी प्रवचनों से सरल भाषा में वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार किया था । आर्यजगत उनका हमेशा ऋणी रहेगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास परिवार ने शनिवार की साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् आयोजित श्रद्धांजलि सभा में उन्हें स्मरण किया और परमपिता परमात्मासे उनकी आत्मा को शांति प्रदान की।

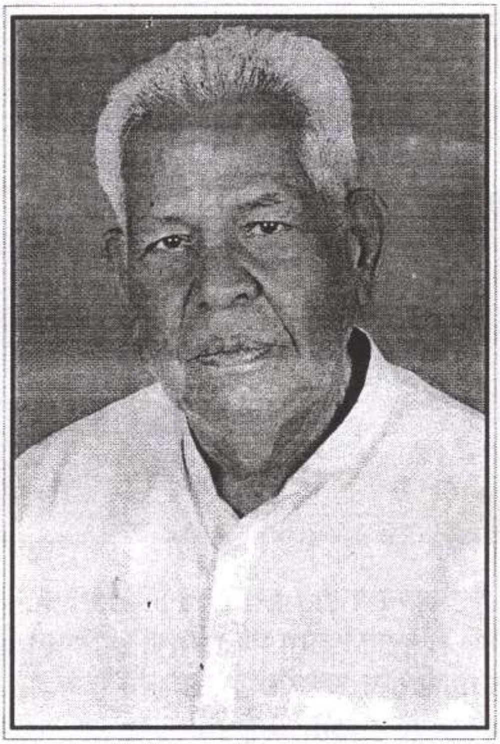

पण्डितजी नाथ द्वारा शैली के ख्यात नाम चित्रकार थे। पौराणिक मन्दिरों में छत व दीवारों पर रामायण और महाभारत की चित्रकथाओं का अंकन किया करते थे। किन्तु आरंभ से ही आपका झुकाव वैदिक धर्म की ओर ही था। आपने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में भी सेवाएँ दी थी। लेकिन आर्यसमाज जैसी पवित्र संस्था की कीमत पर संघ को सींचना उन्हें रास नहीं आया। और धमकियों के उपरान्त भी आर्यजगत में उपदेशक का कार्य आरंभ किया। आर्यजनों को अन्य संस्थओं के योजनाबद्ध षड्यन्त्रों से सचेत भी करते रहते थे। आपको शास्त्रीय संगीत का भी अच्छा ज्ञान था।

वेदकथा के साथ साथ आप शास्त्रीय संगीत पर आधारित राम और कृष्ण कथा भी करते थे। उनके व्याख्यान बहुत ही सरल आर्यभाषा में होते थे, जिनमें वे संस्कृत उद्धरण नगण्य ही देते थे, किन्तु वैदिकवांग्मय का स्वाध्याय उनके व्याख्यानों में उमड़ता था। जिससे भी वे मिलते थे, श्रद्धेय आचार्य सत्यानन्दजी वेदवागीश की तरह यज्ञ करने के लिए प्रेरित करते थे। यज्ञ से होने वाले लाभ गिनाते रहते थे, और कहते थे कि जितनी सामग्री और घृत यज्ञ में आहूत करोगे, परमात्मा उससे कई गुना देगा। उदाहरण भी देते थे। ऐसे सरलमना, सरलस्वभाव, सरल उपदेशक की कमी आर्यजगत को सदा खलेगी।

आर्यसमाज जालोरियाँ का बास जोधपुर का कोरोना के विरुद्ध युद्ध

आर्यवीरदल श्रीसुभाषआर्य व्यायामशाला जालोरीया का बास जोधपुर द्वारा अग्रवाल सेवा समिति जोधपुर के सहयोग से आर्यसमाज प्रांगण में कोरोनावायरस बचाव के लिए अत्यावश्यक रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्युनिटी पॉवर) बढ़ाने हेतु आयुर्वेदिक काढ़ा पिलाया गया। इस अवसर पर दो सौ से ज्यादा ने इसका लाभ प्राप्त क्या ।

सभी लाभान्वितों को तीन दिन तक काढा पिलाया गया। सभी लाभार्थियों ने समय का

पूरा पूरा ध्यान रखा। इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में रोजाना दो सौ से ज्यादा जन साधारण व सदस्यों ने इसका लाभ प्राप्त किया। समापन दिनांक१५ जुलाई २०२० को हुआ। समाज के प्रधान श्री श्यामआर्य ने सहयोग के लिए सभी का धन्यवाद किया।

प्रधान श्रीश्यामआर्य ने बताया कि काढ़ापान के समापन के दिन ही आर्यसमाज जालोरियाँ का बास, जोधपुर द्वारा कोरोना के विरुद्ध युद्ध मे भारत सरकार को सहयोग हेतु इक्कीस हजार रुपयों की सहायता राशि अतिरिक्त जिलाकलक्टर के माध्यम से समर्पितकी। श्री श्यामआर्य, डा० त्रिलोकजी एवं श्रीराजेशजी ने अतिरिक्त जिलाकलक्टर को कार्यालय में जाकर यह राशि भेंट की।

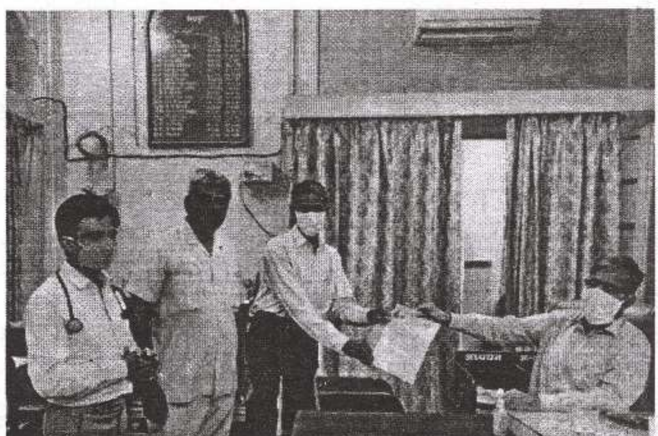

श्रीकृष्ण द्वारा गीता के उपदेश से पूर्व अर्जुन की मनोदशाः

सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति। वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते।।

मेरे अङ्ग शिथिल हो रहे हैं और मुख सूख रहा है तथा मेरे शरीर में कँपकँपी आ रही है एवं रोंगटे खड़े हो रहे हैं।

गाण्डीवं संसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते। न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः।।

हाथ से गाण्डीव धनुष गिर रहा है और त्वचा भी जल रही है, अर्थात् मैं संतप्त बलहीन सा होता जा रहा हूँ।
मोह से ग्रस्त मेरा मन भ्रमित-सा हो रहा है और घबराया हुआ मैं खड़े रहने में भी असमर्थ हो रहा हूँ।।

श्रीकृष्ण द्वारा गीता के उपदेश पश्चात् अर्जुन की मनोदशाः

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव ।।

हे अच्युत ! आपकी कृपा से मेरा मोह नष्ट हो गया है और स्मृति प्राप्त हो गयी है। मैं सन्देहरहित होकर स्थित हूँ। अब मैं आपकी आज्ञाका पालन करूँगा ।।

Postal Reg. Jodhpur/ 434/2018-20

Date of Posting 9,10-08-2020
Date of Print 7-08-2020

स्वतन्त्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

झण्डागीत

झण्डा ऊँचा रहे हमारा, विजयी विश्व तिरंगा प्यारा-२
झण्डा ऊँचा रहे हमारा

सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसारे वाला
वीरों को हर्षानेवाला, मातृभूमि का तन-मन सारा -२
झण्डा ऊँचा रहे हमारा.....

स्वतन्त्रता के भीषण रण में, लखकर जोश बढे क्षणक्षण में
काँपे शत्रु देखकर मन में, मिट जावे भय संकट सारा -२
झण्डा ऊँचा रहे हमारा.....

इस झण्डे के नीचे निर्भय, जो स्वराज जनता का निश्चय
बोलो भारत माता की जय, स्वतन्त्रता ही ध्येय हमारा-२
झण्डा ऊँचा रहे हमारा.....

शान न इस की जाने पावे, चाहे जान भले ही जावे
विश्व विजय करके दिखलावे, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा-२
झण्डा ऊँचा रहे हमारा.....

सत्वाधिकारी महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास के लिए प्रकाशक व मुद्रक विजय ... महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, ... महर्षि दयानन्द मार्ग, मोहनपुरा पुलिया के प... .) से प्रकाशित एवं सैनिक प्रिण्टर्स, मकराण... हाऊस जोधपुर फोन नं. 9829392411 से मुद्रित
सम्पादक फोन नं. 9460649...

30 सम्मानित
श्री प्रधान जी, सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमानरोड़,
जिला--नई दिल्ली, पिन–110025,
प्रान्त– नई दिल्ली